संगीताचार्य

बैजू और गोपाल

जीवनी और रचनाएँ

रचयिता
प्रभुदयाल मीतल

प्रकाशक - साहित्य संस्थान, मथुरा

संगीताचार्य

बैजू और गोपाल

जीवनी और रचनाएँ
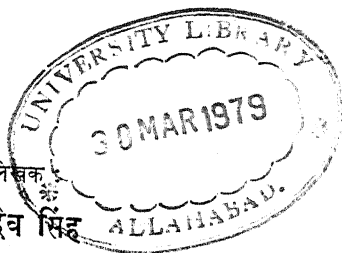
प्रस्तावना-लेखक :

ठा० जयदेव सिंह

[चीफ़ म्युजिक प्रोड्यूसर, आकाशवाणी]

पुस्तक मिलने का पता :—
संगीत कार्यालय
हाथरस (उ०प्र०)

रचयिता :

प्रभुदयाल मीतल

प्रकाशक :

साहित्य संस्थान, मथुरा.

प्रथम संस्करण
श्रावणी पूर्णिमा, सं० २०१७

मूल्य १) ५०, एक रुपया पचास पैसा

मुद्रक :
त्रिलोकीनाथ मीतल, भारत प्रिंटर्स, मीतल निवास, मथुरा ।

प्रस्तावना

हमारे कलाकारों की जीवनी किंवदंतियों के भीतर इस प्रकार उलझ गई है कि जीवन संबंधी तथ्यों का पता लगाना प्रायः असंभव हो गया है। श्री प्रभुदयाल मीतल ने बैजू और गोपाल संबंधी किंवदंतियों का परीक्षण करके वास्तविकता के अनुसंधान का स्तुत्य प्रयास किया है।

संगीत-शास्त्र में जिस गोपाल का उल्लेख आता है, वह दक्षिण के निवासी थे। कुछ लोगों की धारणा है कि वह उत्तर भारत से दक्षिण गये। कुड्डुक्क ताल के संबंध में कल्लिनाथ ने 'संगीत रत्नाकर' पर कलानिधि टीका में उनका उल्लेख किया है। कुड्डुक्क ताल उत्तरी भारत की है ही नहीं। दूसरे गोपाल की गायकी भी प्रबंध की थी; अतः गोपाल का उत्तरी भारत का कलाकार होना सिद्ध नहीं होता।

१३–१४ शती में बैजू नामक किसी प्रसिद्ध कलाकार का उत्तर भारत के न ग्रंथों में, न किंवदंतियों में कोई उल्लेख है। बैजू के कुछ ध्रुवपद मिलते हैं, किंतु १३–१४ शती में ध्रुवपद के प्रादुर्भाव का कोई प्रमाण नहीं मिलता। बैजू संबंधी जो कुछ किंवदंतियाँ हैं, वे सब १६–१७ शती से संबंध रखती हैं। इन किंवदंतियों में बैजू और गोपाल का घनिष्ठ संबंध है। यह गोपाल निस्संदेह १३–१४ शती के गोपाल नहीं हो सकते। या तो यह कोई दूसरे गोपाल थे, अथवा बैजू से बड़प्पन को सिद्ध करने के लिए—उन्हें ललकारने के लिए एक काल्पनिक गोपाल बना लिये गये। कुछ ध्रुवपद गोपाल के रचे हुए मिलते हैं। प्राचीन कवियों और कलाकारों में यह प्रवृत्ति रही कि वह अपनी रचना में किसी प्रसिद्ध कवि या कलाकार का नाम डाल दिया

करते थे, जिससे उनकी रचना को ख्याति मिल जाय। अतः १६-१७ शती के गोपाल या तो काल्पनिक व्यक्ति थे, या कोई अन्य गोपाल थे। यह स्पष्ट है कि वह कल्लिनाथ की टीका में उल्लिखित गोपाल नहीं थे।

बैजू और बख्शू एक व्यक्ति नहीं थे। बख्शू के स्वतंत्र ध्रुवपद मिलते हैं, जिनका शाहजहाँ के समय में संकलन हुआ था। अब प्रश्न यह होता है कि अबुलफ़ज़्ल ने बैजू का उल्लेख क्यों नहीं किया ? उत्तर स्पष्ट है। अबुलफ़ज़्ल ने प्रायः केवल उन्हीं कलाकारों का उल्लेख किया है, जो अकबर के आश्रय में थे। उन्होंने उस काल के गोविन्दस्वामी जैसे विख्यात कलाकार तक का उल्लेख नहीं किया है। जो दरबारी गवैये नहीं थे, उनके प्रति अबुलफ़ज़्ल उदासीन थे।

यह बैजू वही थे, जो राजा मानसिंह तोमर और गुजरात के बहादुरशाह के आश्रय में रह चुके थे। उनका जन्म-स्थान कहाँ था, किस सम्वत् में उनका जन्म हुआ, उनका कब निधन हुआ—यह सब खोज का विषय है।

मीतल जी ने बैजू और गोपाल विषयक प्राप्य सामग्री को श्रमपूर्वक एकत्र किया है और उससे संबंधित सभी पक्षों को पाठक के सामने प्रस्तुत कर दिया है। एतदर्थ वह हमारे साधुवाद के पात्र हैं। उनकी यह पुस्तक पठनीय और मननीय है।

आकाश वाणी,
नई दिल्ली.

—जयदेव सिंह

वक्तव्य

जिन कलाकारों की सतत साधना से भारतीय संगीत को गौरव प्राप्त हुआ है, उनमें संगीताचार्य बैजू और गोपाल के नाम उल्लेखनीय हैं। संगीत-साधक के रूप में उनकी जितनी अधिक ख्याति है, उतनी अधिक किंवदंतियाँ भी उनके संबंध में प्रचलित हैं। इन किंवदंतियों के बीहड़ वन में प्रामाणिकता की पगडंडी खोज निकालना अन्वेषणशील साहित्य-शोधकों के लिए भी एक जटिल समस्या बनी हुई है। इस पुस्तक में उक्त समस्या के कुछ समाधान का प्रयास किया गया है। यह स्पष्ट है, इसका पूर्ण समाधान तो भविष्यत् अनुसंधानों की सफलता पर ही निर्भर है।

ध्रुपद के दरबारी गायकों में तानसेन के बाद बैजू का नाम अधिक प्रसिद्ध है। संगीत की पोथियों और संगीतज्ञों की मंडलियों में भी तानसेन के अतिरिक्त बैजू के ध्रुपदों ने ही मान्यता प्राप्त की है। साहित्यिक दृष्टि से भी बैजू की रचनाओं का अत्यधिक महत्व है। कारण यह है कि वे सूर-पूर्व की अस्पष्ट साहित्य-शृंखला की अन्यतम स्पष्ट कड़ियाँ हैं।

आश्चर्य की बात है, ऐसे सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ का नामोल्लेख भी अबुलफजल, अबुलकादिर बदायूनी और फकीरुल्ला जैसे इतिहासज्ञ और संगीतज्ञ विद्वानों ने नहीं किया; जब कि उन्होंने अपने समकालीन ही नहीं, वरन् पूर्ववर्ती अनेक संगीतज्ञों के साथ उस काल के बख्शू नामक एक संगीतशास्त्री का अत्यंत प्रशंसापूर्ण शब्दों में उल्लेख किया है। बैजू और बख्शू के काल, आश्रयदाता, उनकी गायन शैली और रचना में इतना अद्भुत साम्य है कि उन दोनों के एक ही व्यक्ति होने का अनुमान किया जा सकता है; किंतु इसका अंतिम निर्णय उन दोनों की अधिक रचनाएँ प्राप्त होने पर ही किया जा सकेगा।

गोपाल की समस्या बैजू से भी अधिक उलझी हुई है। इस विख्यात संगीत-शास्त्री का उल्लेख जहाँ एक ओर १४ वीं शती में अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी अमीर खुसरू के साथ संगीत-प्रतियोगिता के प्रसंग में मिलता है, वहाँ दूसरी ओर उसकी विद्यमानता १६ वीं शती में मानसिंह तोमर, सिकन्दर लोदी और राजाराम बघेला के शासन-काल में विद्यमान बैजू और तानसैन के साथ सिद्ध होती है। हमारे मतानुसार गोपाल एक नहीं दो हुए हैं। इस पुस्तक में उन दोनों के जीवन-वृत्तांतों को स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है।

यह पुस्तक दो विभागों में विभाजित है। प्रथम में बैजू और गोपाल के जीवन-वृत्तांत का विवेचन है, जिसकी संक्षिप्त रूपरेखा ऊपर बतलाई जा चुकी है। दूसरे विभाग में उनकी उपलब्ध रचनाओं का संकलन है। पुस्तक के अंत में एक परिशिष्ट है, जिसमें बख्शू के कुछ ध्रुपदों का संग्रह है। इन रचनाओं की प्रामाणिकता के विषय में निश्चयपूर्वक अभी नहीं कहा जा सकता है। यह स्पष्ट है, इनकी भाषा-शैली में काल-क्रम से पर्याप्त परिवर्तन हुआ है और इनमें कुछ प्रक्षिप्त रचनाएँ भी दूध में पानी की तरह मिल गई हैं।

इस पुस्तक की रचना में जिन विद्वानों के ग्रंथों और लेखों से सहायता ली गई है, उनके प्रति मैं विनम्र भाव से अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। भारतीय संगीत के सुप्रसिद्ध विद्वान और आकाशवाणी दिल्ली के मुख्य संगीत-अधिकारी ठा० जयदेवसिंह जी का मैं अत्यंत अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। ठाकुर साहब ने बैजू और गोपाल के संबंध में जो अपना अभिमत प्रकट किया है, वह उनकी सुलझी हुई स्पष्ट विचारधारा तथा उनके गंभीर अध्ययन का परिचायक है।

मीतल निवास,

डेम्पियर पार्क, मथुरा.

—प्रभुदयाल मीतल

विषय–सूची

★

१. जीवन-वृत्तांत

२. रचना-संग्रह

परिशिष्ट

सहायक ग्रंथ और पत्र-पत्रिकाएँ

★

१. आईन-ए-अकबरी (अँगरेजी) : ब्लोचमैन
२. उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास : विष्णुनारायण भारतखंडे
३. हिंदुई साहित्य का इतिहास : गार्सा द तासी
४. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
५. मानसिंह और मानकुतूहल : हरिहरनिवास द्विवेदी
६. मध्यदेशीय भाषा (ग्वालियरी) : हरिहरनिवास द्विवेदी
७. संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ : नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
८. कवि तानसेन और उनका काव्य : नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
९. संगीत-सम्राट तानसेन : जीवनी और रचनाएँ : प्रभुदयाल मीतल
१०. मृगनयनी : वृंदावनलाल वर्मा
११. संगीत राग कल्पद्रुम (भाग १, २) : कृष्णानंद व्यास
१२. नादविनोद : पन्नालाल गोस्वामी
१३ संगीत सुदर्शन : सुदर्शनाचार्य शास्त्री
१४. ध्रुपद स्वर लिपि : हरिनारायण मुखर्जी
१५. सारंग (उत्तर भारतीय संगीत के ध्रुपद-रचयिता) : चंद्रशेखर पंत
१६. नवनीत (अप्रैल, १९५६ ई०)—बम्बई
१७. सरस्वती (अगस्त, १९५७ ई०)—इलाहाबाद
१८. संगीत (हरिदास अंक)—हाथरस
१९. साप्ताहिक हिन्दुस्तान (१७ जून, १९५६ ई०)—नई दिल्ली

संगीताचार्य

बैजू और गोपाल

●

१. जीवन-वृत्तांत

आरंभिक कथन—

उत्तर भारतीय संगीत की सुप्रसिद्ध ध्रुपद शैली के गायकों में संगीताचार्य बैजू बावरा का नाम जितना विख्यात है, उतना तानसेन के अतिरिक्त किसी अन्य कलाकार का नहीं है। आज-कल जो प्राचीन ध्रुपद उपलब्ध हैं, उनमें से अधिकांश बैजू और तानसेन के रचे हुए हैं। संगीत के विविध ग्रंथों में भी अधिकतर उन दोनों के ही ध्रुपद मिलते हैं। उत्तर भारतीय संगीत की महान् रचना 'राग कल्पद्रुम' में बैजू और तानसेन के बहुसंख्यक ध्रुपदों का संकलन किया गया है। उन दोनों सुविख्यात संगीतज्ञों के बाद बक्सू, गोपाल और बाबा रामदास के नाम भी ध्रुपद गायकों के रूप में प्रसिद्ध हैं, किंतु उनकी रचनाएँ अपेक्षाकृत कम परिणाम में प्राप्त होती हैं।

मुगल सम्राट अकबर के दरबारी इतिहासकार मुंशी अबुलफजल और मुल्ला अब्दुलकादिर बदायूनी के ग्रंथों में तानसेन, बक्सू और बाबा रामदास का उल्लेख हुआ है। इससे उनके निश्चित काल का ही नहीं, वरन् संक्षिप्त जीवन-वृत्त का भी बोध हो जाता है। अकबर कालीन उक्त इतिहासकारों के उल्लेखों से ज्ञात होता है कि तानसेन और बाबा रामदास

सम्राट अकबर के तथा बक्सू ग्वालियर-नरेश मानसिंह तोमर के दरबारी गायक थे। बक्सू का अस्तित्व-काल तानसेन और बाबा रामदास से कुछ पहले का जान पड़ता है।

अबुलफजल ने तानसेन और बक्सू के गायन की बड़ी प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है, तानसेन के समान उत्तम गायक पिछले एक हजार वर्ष में नहीं हुआ। बक्सू के संबंध में उन्होंने लिखा है, वह तानसेन के अतिरिक्त सबसे अधिक प्रशंसनीय गायक था। तानसेन पहले रीवां के राजा रामचंद्र के दरबार में नियुक्त हुआ। बाद में वह मुगल सम्राट अकबर के दरबारी संगीतज्ञों का नायक बनाया गया। नायक बक्सू राजा मानसिंह तोमर और उनके पुत्र विक्रमाजीत के दरबार में था। जब दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी ने विक्रमाजीत को युद्ध में पराजित कर उससे ग्वालियर का राज्याधिकार ले लिया, तब वह विख्यात गायक कालिंजर के राजा कीरत के आश्रय में चला गया। वहाँ से उसे गुजरात के संगीतप्रिय सुल्तान बहादुरशाह (शासन काल सं० १५८३ से १५९३) ने अपने दरबार में बुला लिया था[१]।

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने बाबा रामदास के विषय में लिखा है, वह पहले इस्लामशाह सूरी के दरबार में था। हुमायू द्वारा सूरियों की सत्ता समाप्त किये जाने पर वह अकबर के संरक्षक बैरमखाँ के आश्रय में चला गया। बैरमखाँ बाबा रामदास को सदैव अपने साथ रखता था और उसका गायन सुन कर अत्यंत आनंदित होता था। अकबर से विद्रोह करने के अनंतर जब बैरमखाँ का पतन हुआ, तब बाबा रामदास

[१] आईने अकबरी (कर्नल एच० एच० जरेट कृत अंगरेजी संस्करण) जिल्द १, पृ० ६८० की टिप्पणी।

को अकबरी दरबार के सुविख्यात संगीतज्ञों में सम्मलित किया गया। बदायूनी ने रामदास के गायन की बड़ी प्रशंसा की है। उसने लिखा है, वह अपने समय का विख्यात संगीतज्ञ और तानसेन के बाद सबसे अधिक प्रसिद्ध गायक था। अबुलफ़जल ने अकबरी दरबार के जिन ३६ संगीतज्ञों की सूची दी है, उसमें पहिला नाम तानसेन का और दूसरा बाबा रामदास का है। इससे अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में रामदास की महत्त्वपूर्ण स्थिति का परिचय मिलता है।

इस प्रकार अकबर कालीन इतिहास-लेखकों की रचनाओं में तानसेन, बक्सू और रामदास विषयक उल्लेख तो मिलते हैं, किंतु उनमें बैजू और गोपाल के संबंध में कुछ नहीं लिखा गया है। इससे उनके अस्तित्व में संदेह हो सकता है, किंतु उनकी उपलब्ध रचनाएँ उन दोनों विख्यात ध्रुपद-गायकों के अस्तित्व को प्रमाणित करती हैं।

यद्यपि बैजू और गोपाल के विषय में ऐतिहासिक उल्लेखों का अभाव है, तथापि उनसे संबधित अनेक किंवदंतियाँ और अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं। इनमें बैजू और गोपाल के नाम ही साथ-साथ नहीं आते, बल्कि उनकी जीवन घटनाएँ भी मिली-जुली मिलती हैं। बैजू की रचनाओं के अंतःसाक्ष्य से भी उसका गोपाल से कुछ संबंध सिद्ध होता है।

बैजू और गोपाल विषयक ऐतिहासिक सामग्री के अभाव में यह आवश्यक है कि उनसे संबंधित कतिपय अधिक प्रचलित किंवदंतियों का संकलन किया जाय और उनमें से उनकी जीवनी के उन अंशों को मान्यता दी जाय, जिनकी कुछ न कुछ पुष्टि अन्य सूत्रों से भी हो सकती है।

कतिपय किंवदंतियाँ—

बैजू और गोपाल से संबंधित कतिपय किंवदंतियाँ इस प्रकार हैं—

१—बैजू का जन्म गुजरात के चाँपानेर निवासी एक धार्मिक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उसके पिता का देहांत उसके बाल्य-काल में ही हो गया था, अतः उसके पालन-पोषण का भार उसकी अनाथ माता पर आ पड़ा। बैजू की माता श्रीकृष्ण की उपासिका थी। उसके प्रभाव से बैजू भी अपनी बाल्यावस्था में ही श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त हो गया था।

जब बैजू की किशोरावस्था थी, तभी उसकी माता अपने निवास-स्थान को छोड़ कर श्रीकृष्ण के लीला-धाम वृंदाबन चली गई। उसके साथ बैजू भी गुजरात से वृंदाबन आ गया। वहाँ पर उसने वृंदाबन के संत-संगीताचार्य स्वामी हरिदास से गायन कला की शिक्षा प्राप्त की। स्वामी जी के शिक्षण और सत्संग से बैजू महान् संगीतज्ञ और परम भक्त हो गया।

२—स्वामी हरिदास की कृपा से संगीत कला में पारांगत होकर युवक बैजू ने उस समय के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ और मुगल सम्राट अकबर के दरबारी गायक तानसेन को संगीत-प्रतियोगिता के लिए चुनौती दी। उन दिनों तानसेन अभूतपूर्व प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त करने से बड़ा अभिमानी हो गया था। वह अकारण ही संगीतज्ञों का अपमान भी किया करता था। बैजू ने संगीत-प्रतियोगिता में तानसेन को पराजित कर उसके गायन-गर्व का खंडन किया।

३—बैजू अपने आरंभिक जीवन में चंदेरी-नरवर के निकटवर्ती किसी स्थान में निवास करता हुआ संगीत कला का अभ्यास किया करता था। वह पहले चंदेरी के शासक राजसिंह कछवाहा का गायक नियुक्त हुआ, किंतु उसे वहाँ पर अपनी कला

की उन्नति के लिए समुचित क्षेत्र नहीं मिला। उन दिनों ग्वालियर के कलाप्रिय राजा मानसिंह तोमर भारतीय संगीत के परिष्कार और प्रसार का भारी प्रयास कर रहे थे, अतः बैजू चंदेरी से ग्वालियर चला गया और वहाँ का दरबारी गायक हो गया। मानसिंह तोमर ने बैजू के सहयोग से ही संगीत की ध्रुपद शैली का आविष्कार और प्रचार किया था। बैजू ने मानसिंह की कलाप्रिय गूजरी रानी मृगनयनी को भी संगीत कला में निपुण कर दिया। उसने उक्त गूजरी रानी के नाम पर कई नये रागों का आविष्कार किया, जिनमें 'गूजरी टोड़ी' और 'मंगल गूजरी' प्रसिद्ध हैं। वह पागलों की तरह दिन-रात संगीत-साधना में तल्लीन रहा करता था। इससे वह बैजू बावरा कहलाने लगा। संगीत-जगत् में वह 'बैजू बावरा' के नाम से ही विख्यात है।

४—बैजू के कई शिष्य थे। उनमें गोपाल सबसे अधिक प्रतिभाशाली था। वह कालांतर में विख्यात संगीत-शास्त्री होकर गोपाल नायक के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बैजू अपने सुयोग्य शिष्य गोपाल से अत्यंत स्नेह करता था और उसकी प्रतिष्ठा व ख्याति से अत्यंत आनंदित होता था। कालांतर में गोपाल अपनी अप्रतिष्ठा की आशंका से बैजू को अपना संगीत-गुरु कहने में संकोच करने लगा। एक बार दोनों किसी संगीत सम्मेलन में मिले थे, वहाँ गोपाल ने बैजू को अपना गुरु मानने से इंकार किया। बैजू ने गोपाल की कृतघ्नता से दुखित होकर उसके साथ गायन-प्रतिद्वंदिता की। उस अवसर पर बैजू ने अपने चमत्कारपूर्ण संगीत से गोपाल को परास्त कर दिया। गोपाल ने अपने अनुचित व्यवहार के लिए बैजू से क्षमा-याचना की। साधु-स्वभाव बैजू ने अपने अनुपम औदार्य और सहज स्नेह से गोपाल को क्षमा कर दिया।

किंवदंतियों की समीक्षा—

पूर्वोक्त चारों प्रमुख किंवदंतियों की परीक्षा और समीक्षा करने के उपरांत हम बैजू और गोपाल की जीवनी के कुछ प्रामाणिक अंश निश्चित करने की चेष्टा करेंगे। उन किंवदंतियों का क्रमशः विवेचन इस प्रकार है—

१—बैजू के गुजरात में उत्पन्न होने की प्रथम किंवदंती सत्य जान पड़ती है, यद्यपि उसका कोई ऐतिहासिक उल्लेख उपलब्ध नहीं है। गुजराती विद्वान बैजू को गुजरात का निवासी मानते हैं। अहमदाबाद के श्री नरेन्द्रराय शुक्ल ने आकाशवाणी से प्रसारित अपनी वार्ता में बैजू को गुजराती सिद्ध किया है। ऐसा सुना गया है, गुजरात में 'बावरा' नामक एक जन-जाति का निवास था और बैजू उसी जाति का होने से 'बैजू बावरा' कहलाता था। यदि यह सत्य है, तो बैजू के गुजराती होने की पुष्टि होती है।

बैजू का जन्म चाहें गुजरात में न हुआ हो, किंतु वह किसी समय उस प्रदेश में रहा अवश्य था। मानसिंह तोमर की मृत्यु के बाद जब ग्वालियर के विख्यात संगीतज्ञों की मंडली बिखरने लगी, तब संभवतः बैजू भी बक्सू की तरह गुजरात चला गया था। उसकी जाति के विषय में निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह ब्राह्मण था अथवा किसी अन्य जाति का।

स्वामी हरिदास से वृंदाबन में बैजू की संगीत-शिक्षा होने की बात प्रामाणिक ज्ञात नहीं होती है, क्यों कि बैजू का समय स्वामी हरिदास से कुछ पहले का सिद्ध होता है। स्वामी जी के जन्म-काल के विषय में दो मान्यताएँ प्रचलित हैं। एक के अनुसार उनका जन्म सं. १५३७ और दूसरी के अनुसार सं. १५६६

में हुआ माना जाता है। दोनों मान्यताओं में उनका वृंदाबन-आगमन सं.१५६२ से पूर्व नहीं माना जाता है, जब कि बैजू इससे पहले ही मानसिंह तोमर के आश्रय में ग्वालियर पहुँच गया था। गूजरी रानी मृगनयनी के साथ मानसिंह तोमर का विवाह सं० १५५० के लगभग हुआ था। उसके कुछ समय बाद ही बैजू का ग्वालियर जाना सिद्ध होता है।

२—बैजू और तानसेन की संगीत-प्रतियोगिता विषयक दूसरी किंवदंती का समर्थन किसी भी प्रामाणिक सूत्र से नहीं होता है। इस किंवदंती में बैजू की आयु तानसेन से कम मानी जाती है, जो सर्वथा असंगत है। इस किंवदंती के आधार पर एक फिल्म का निर्माण हुआ है। उसमें युवक बैजू द्वारा वयस्क तानसेन को संगीत-प्रतिद्वंदिता में पराजित दिखलाया गया है। आज-कल की फिल्मों में ऐतिहासिक घटनाएँ भी रोचकता के बहाने गलत ढंग से प्रस्तुत की जाती हैं। इस दोष से यह चित्र-पट भी मुक्त नहीं है। इसमें प्रदर्शित घटनाओं का इतिहास से समर्थन नहीं होता है।

३—बैजू के ग्वालियर-नरेश मानसिंह तोमर के समकालीन और उनके दरबारी गायक होने की तीसरी किंवदंती बहुत प्रसिद्ध है। इसी के आधार पर श्री वृंदाबनलाल जी वर्मा ने अपने सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास 'मृगनयनी' की रचना की है। इसके 'परिचय' में वर्मा जी ने अपने पात्रों के चरित्र-चित्रण का ऐतिहासिक आधार बतलाया है। उन्होंने बैजू के विषय में लिखा है—"बैजनाथ नायक (बैजू बावरा) मानसिंह-मृगनयनी के गायक थे। गूजरी टोड़ी, मंगल गूजरी इत्यादि राग इसी मृगनयनी के नाम पर बने हैं।" इस संक्षिप्त कथन के अतिरिक्त वर्मा जी ने बैजू के संबंध में और कुछ नहीं लिखा है। इससे

यह ज्ञात नहीं होता है कि मृगनयनी जैसे ऐतिहासिक उपन्यास में बैजू का चरित्र-चित्रण किसी ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर किया गया है, अथवा किंवदंती के अनुसार।

अबुलफजल कृत 'आईने अकबरी' में मानसिंह तोमर और उनके गायकों का उल्लेख हुआ है। उसमें लिखा गया है, मानसिंह तोमर ने अपने विख्यात गायक बक्सू, मच्छु और भानु की सहायता से ध्रुपद शैली का आविष्कार और प्रचार किया था। इस प्रकार उसमें बैजू बावरा का नामोल्लेख नहीं हुआ है। सर डबल्यू आसले कृत 'एनेकडोट्स आफ इंडियन म्यूजिक' से ज्ञात होता है कि मानसिंह तोमर के शासन-काल में उनके आदेशानुसार 'मान कुतूहल' नामक एक संगीत ग्रंथ का संकलन किया गया था, जिसमें उस समय के संगीत का विवेचन और संगीतज्ञों की रचनाओं का संग्रह था। उस ग्रंथ का महत्व निर्विवाद है, किंतु अनेक चेष्टाएँ करने पर भी वह अब तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अब से कुछ समय पूर्व ही उसका फारसी अनुवाद 'राग दर्पण' प्राप्त हुआ है। 'राग दर्पण' की रचना मुगल सम्राट औरंगजेब के एक उच्च पदाधिकारी फकीरुल्ला द्वारा हुई थी। उसका हिंदी अनुवाद अन्य ज्ञातव्य बातों सहित श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने 'मानसिंह और मान-कुतूहल' के नाम से प्रकाशित किया है।

फकीरुल्ला औरंगजेब के शासन-काल में काश्मीर का सूबेदार था। वह कट्टर मुसलमान और औरंगजेब की धार्मिक नीति का पक्का समर्थक था। उसने काश्मीर के निकट-वर्ती अनेक स्थानों में युद्ध करके वहाँ के निवासियों को बल पूर्वक मुसलमान बनाया था और उन स्थानों को औरंगजेब के साम्राज्य में सम्मलित किया था। ऐसा तास्सुवी मुसलमान

होते हुए भी वह भारतीय संगीत का बड़ा प्रेमी था। उसने मानसिंह तोमर कृत 'मान कुतूहल' के आधार पर फारसी में 'राग दर्पण' नामक एक संगीत ग्रंथ की रचना की थी। उस महत्वपूर्ण ग्रंथ में उसने अलाउद्दीन खिजली से औरंगजेब तक प्राय: ४०० वर्ष के उत्तर भारतीय संगीत की विकास-परंपरा पर प्रकाश डाला है। इस ग्रंथ में उल्लिखित अमीर खुसरू और गोपाल नायक की संगीत-प्रतियोगिता; मानसिंह तोमर द्वारा ध्रुपद शैली का आविष्कार और प्रचार तथा 'मान कुतूहल' की रचना का विवरण; अकबर कालीन तानसेन आदि विख्यात संगीतज्ञों का विस्तृत वृत्तांत और उनकी मानसिंह तोमर कालीन संगीतज्ञों से तुलना; जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के दरबारी संगीतज्ञों के नामोल्लेख तथा औरंगजेब की तथाकथित संगीत विरोधी नीति का स्पष्टीकरण आदि बातें ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। फकीरुल्ला ने प्रचुर व्यय और पर्याप्त परिश्रम के उपरांत 'राग दर्पण' की रचना सं० १७२५ वि० में की थी।

फकीरुल्ला ने 'राग दर्पण' में लिखा है, राजा मानसिंह तोमर के संगीत-प्रेम और संगीत-ज्ञान की ख्याति उस समय देश भर में फैली हुई थी। उसके दरबार में बड़े-बड़े गायक आते रहते थे। एक बार कुरुक्षेत्र-स्नान के उद्देश्य से यात्रा करता हुआ तेलंगाना का विख्यात गायक नायक पांडवीय ग्वालियर गया था। उस समय वहाँ पर सुप्रसिद्ध गायक बक्सू, महमूद और कर्ण भी उपस्थित थे। राजा मानसिंह ने उन लब्धप्रतिष्ठ संगीताचार्यों की उपस्थिति का लाभ उठाने के लिए एक संगीत-परिषद् का आयोजन किया। उस परिषद् में वाद-विवाद के अनंतर संगीत संबंधी कई विवादास्पद समस्याएँ सुलझाई गई।

राजा मानसिंह स्वयं संगीत का अपूर्व ज्ञाता था। उसने परिषद् के निर्णय और निष्कर्ष को एक ग्रंथ में संकलित किया, जिसका नाम 'मान कुतूहल' रखा। मानसिंह तोमर ने जिस ध्रुपद शैली का आविष्कार किया था, उसका विशेष प्रचार उस समय के विख्यात संगीतज्ञ नायक मन्नू, बक्सू, महमूद और कर्ण द्वारा हुआ था[१]।

अबुलफजल कृत 'आईने अकबरी' की तरह फकीरुल्ला कृत 'राग दर्पण' में भी मानसिंह तोमर के गायकों में बक्सू का प्रशंसात्मक शब्दों में उल्लेख है, किंतु उसमें बैजू का नाम नहीं है। इन दो मुसलमान लेखकों के साक्ष्य से समझा जा सकता है कि बैजू को मानसिंह तोमर का गायक बतलाना प्रामाणिक कथन नहीं है। इसलिए मृगनयनी जैसे ऐतिहासिक उपन्यास का आधार ही ढह जाता है!

अबुलफजल और फकीरुल्ला के ग्रंथों में बैजू का नामोल्लेख न होने पर भी उसके अस्तित्व से इंकार नहीं किया जा सकता। हम लिख चुके हैं, बैजू के बहुसंख्यक ध्रुपद ही उसके अस्तित्व के प्रमाण हैं। फिर उन विख्यात मुसलमान लेखकों द्वारा बैजू का नामोल्लेख न होने का क्या कारण है? हमारी समझ से इसके दो कारण हो सकते हैं। एक यह कि उन्होंने जान-बूझ कर बैजू के नाम पर पर्दा डालने की चेष्टा की हो। दूसरा यह कि उन्होंने भ्रम वश बैजू का उल्लेख किसी दूसरे नाम से किया हो।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि अबुलफजल तानसेन का बड़ा प्रशंसक था। उसने तानसेन की अतिशयोक्ति पूर्ण प्रशंसा करते हुए लिखा है कि उसके समान संगीतज्ञ पिछले

---

[१] मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० ४३ और ६१

एक हजार वर्ष में नहीं हुआ;. यद्यपि उसी काल में स्वामी हरिदास और गोविंद स्वामी जैसे महान् संगीताचार्य विद्यमान थे, जो तानसेन के संगीत-गुरु भी कहे जाते हैं। स्वामी हरिदास और गोविंद स्वामी दोनों विरक्त महात्मा थे, जो संगीत कला में तानसेन से किसी भी प्रकार कम न होते भी लौकिक प्रशंसा को उपेक्षणीय ही नहीं, त्याज्य भी मानते थे। अबुलफजल ने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन अनेक छोटे-बड़े संगीतज्ञों का उल्लेख किया है, किंतु उन्होंने स्वामी हरिदास और गोविंद स्वामी के नाम तक नहीं लिखे। जो व्यक्ति तानसेन के लिए अपने समकालीन उन महान् संगीताचार्यों की उपेक्षा कर सकता है, वह अपने पूर्ववर्ती बैजू के अस्तित्व पर भी पर्दा डाल सकता है।

जो संदेह अबुलफजल के विषय में किया जा सकता है, वह फकीरुल्ला के संबंध में संभव नहीं है। यद्यपि फकीरुल्ला अबुलफजल से कहीं अधिक कट्टर मुसलमान था, तथापि उसने संगीतज्ञों का गुण-कथन करने में हिंदू-मुसलमान का भेद-भाव नहीं किया है। उसने ग्वालियर-नरेश मानसिंह तोमर की संगीतज्ञता का गुण-गान करते हुए उसके द्वारा आविष्कृत और प्रचारित संगीत की ध्रुपद शैली का महत्व स्वीकार किया है। उसने मानसिंह तोमर के गायकों की तुलना में सम्राट अकबर के जगविख्यात दरबारी गायकों को 'अताई' अर्थात् संगीत-सिद्धांत से अपरिचित बतलाया है ! उसने तानसेन को भी 'अताई' लिखा है, जब कि उसने पांडवीय, कर्ण, महमूद और बवसू के संगीत-ज्ञान की प्रशंसा की है। ऐसी स्थिति में बैजू के नामोल्लेख न होने का दूसरा कारण भी संभव हो सकता है, अर्थात् उन मुसलमान लेखकों ने भ्रम वश बैजू का उल्लेख किसी दूसरे नाम से किया है। हम इस संबंध में आगे विस्तार पूर्वक लिखेंगे।

४—बैजू और गोपाल के गुरु-शिष्य होने तथा बाद में दोनों की संगीत-प्रतिद्वंदिता विषयक चौथी किंवदंती विशेष रूप से विचारणीय है। जहाँ तक दोनों के गुरु-शिष्य होने की बात है, वह प्रामाणिक ज्ञात नहीं होती है। बैजू ने अपने अनेक ध्रुपदों में गोपाल को संबोधन किया है। यह संबोधन ऐसा नहीं है, जैसा एक गुरु अपने शिष्य को करता है, परंतु वह बराबर वालों जैसा है। कई ध्रुपद ऐसे भी मिलते हैं, जिनमें बैजू ने गोपाल को आदर पूर्वक 'गोपाल नायक' कह कर संबोधित किया है। इससे ज्ञात होता है, गोपाल बैजू का शिष्य नहीं था, बल्कि उसके मुकाबले का कोई विख्यात संगीत-शास्त्री था। उन दोनों की संगीत-प्रतिद्वंदिता की बात प्रामाणिक जान पड़ती है, क्यों कि बैजू के अनेक ध्रुपदों में ही इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार बैजू और गोपाल से संबंधित किंवदंतियों की समीक्षा करने के अनंतर उनके जीवन-वृत्तांत के कुछ निश्चित सूत्र संकलित किये जा सकते हैं।

अस्तित्व-काल—

सबसे पहिले बैजू और गोपाल के अस्तित्व-काल पर विचार करना उचित है। यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि उनसे संबंधित स्पष्ट ऐतिहासिक उल्लेख के अभाव में उनका अस्तित्व-काल भी उनके जीवन-वृत्तांत की अन्य बातों की तरह विवादग्रस्त बन गया है। जहाँ तक हिंदी साहित्य के इतिहास-कारों का संबंध है, उन्होंने भी अकबर कालीन इतिहास-लेखकों की तरह इन विख्यात कलाकारों की प्रायः उपेक्षा ही की है। हिंदी साहित्य के बहुसंख्यक इतिहास ग्रंथों में से केवल फ्रांसीसी लेखक गार्सा द तासी और आचार्य रामचंद्र शुक्ल की रचनाओं में ही बैजू का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है।

गार्सा द तासी कृत हिंदी साहित्य के इतिहास की प्रथम रचना 'हिंदुई साहित्य का इतिहास' में लिखा गया है—

बैजू बावरा उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हैं, जो छः या सात सौ वर्ष पूर्व विद्यमान थे। उनका संगीतज्ञों और गवैयों में मान है और उन्होंने लोकप्रिय गीत लिखे हैं[1]।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखा है—

बैजू बावरा एक प्रसिद्ध गवैया हो गया है, जिसकी ख्याति तानसेन से पहले देश में फैली हुई थी[2]।

उपर्युक्त उल्लेखों में से तासी के मत से बैजू का अस्तित्व अलाउद्दीन खिलजी के समय के लगभग ज्ञात होता है, जब कि शुक्ल जी के मत से उसके यथार्थ काल का बोध नहीं होता है। बैजू के रचे हुए अनेक ध्रुपदों और उनकी भाषा शैली उसके अलाउद्दीन खिजली के समकालीन होने के विरुद्ध पड़ती है, अतः तासी का उपर्युक्त उल्लेख भी बैजू का अस्तित्व-काल निश्चित करने में सहायक नहीं होता है।

हम पहले लिख चुके हैं, बैजू के नाम से प्रचलित अनेक ध्रुपदों में गोपाल का नाम मिलता है। उसके कई ध्रुपद ऐसे हैं, जिनमें गोपाल से उसकी संगीत-प्रतियोगिता होने का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। बैजू का अस्तित्व-काल और उससे गोपाल का संबंध निश्चित करने के लिए ये उल्लेख महत्वपूर्ण हैं, अतः पहले गोपाल विषयक अनुसंधान करना आवश्यक है।

---

[1] हिंदुई साहित्य का इतिहास, पृ० १६१

[2] हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० १४५

उत्तर भारतीय संगीतज्ञों में गोपाल नायक का नाम प्रसिद्ध है। उससे संबंधित कई किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। इन किंवदंतियों में अमीर खुसरू और नायक बैजू से गोपाल नायक की संगीत-प्रतियोगिता होने की बात खूब प्रसिद्ध है। खुसरू और गोपाल की संगीत-प्रतिद्वंदिता का उल्लेख फकीरुल्ला, कैप्टिन विलर्ड और विष्णुनारायण भातखंडे जैसे संगीत के विख्यात विद्वानों के ग्रंथों में भी हुआ है[1]। फकीरुल्ला कृत 'राग दर्पण' में लिखा गया है, गोपाल नायक दक्षिण का महान् संगीताचार्य और गायक था। वह अलाउद्दीन खिजली के शासन-काल में दक्षिण से दिल्ली गया था। वहाँ अलाउद्दीन के दरबार में अमीर खुसरू से इसकी गायन-प्रतियोगिता हुई थी।

मुसलमानी शासकों में अलाउद्दीन खिलजी (शासन-काल सं० १३५३ से १३७३) पहिला व्यक्ति था, जिसने संगीत की ओर रुचि प्रदर्शित की थी। उसके दरबार में अमीर खुसरू नामक एक विख्यात विद्वान था। वह कई भाषाओं का ज्ञाता, फारसी का महान् कवि और संगीत कला का मर्मज्ञ था। उसने भारतीय संगीत में अरबी, ईरानी, तूरानी तत्त्वों का समावेश कर मिश्रित राग और नवीन वाद्य यंत्रों का आविष्कार किया था। भारत और ईरान के संगीत को मिला कर उसने जिन नये रागों का प्रचलन किया, उनमें साज़गिरी, उश्शाक, ज़िला, सरपरदा उल्लेखनीय हैं। उसने भारत की परंपरागत वीणा के रूप में परिवर्तन कर एक नये वाद्य यंत्र का निर्माण किया, जो अपने

---

[1] मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० ९४

ट्रीटाइज आन दि म्युजिक आफ हिंदुस्तान, पृ० १६०

उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, पृ० १५

तारों की संख्या के कारण 'सहतार' और फिर बिगड़ कर 'सितार' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने गायन की एक नवीन शैली को भी जन्म दिया, जो 'कव्वाली' कहलाती है। इस प्रकार अमीर खुसरू ने भारतीय संगीत में क्रांतकारी परिवर्तन किये थे।

खुसरू का जन्म एटा जिला के पटियाली ग्राम में सं० १३१० के लगभग हुआ था। वह दिल्ली के गुलाम वंशीय सुल्तान गयासुद्दीन बलबन के समय में शाही नौकरी में आया, और अलाउद्दीन खिलजी के काल तक विद्यमान था। उसने कई सुल्तानों का ज़माना देखा था। अंत में सं० १३८२ के लगभग ७२ वर्ष की आयु में उसका देहावसान दिल्ली में हुआ था।

फकीरुल्ला ने लिखा है, जब गोपाल नायक दक्षिण से दिल्ली पहुँचा, तब उसने अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतज्ञों को गायन-प्रतियोगिता की चुनौती दी। उस समय दरबार के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ अमीर खुसरू के साथ उसकी संगीत-प्रतियोगिता हुई थी। अमीर खुसरू गोपाल नायक के अपार संगीत-ज्ञान से हतप्रभ होने पर भी छल से उसे पराजित करने में सफल हुआ था। फकीरुल्ला ने उस प्रसंग का वर्णन इस प्रकार किया है—

"अमीर खुसरू ने सुल्तान अलाउद्दीन से कहा कि वर्तमान काल में गोपाल अद्वितीय गायक है और उसके १२०० शिष्य हैं, जो सिंहासन को कहारों के स्थान पर उठाते हैं और उसमें अपनी भलाई समझते हैं। आप मुझे तख्त के नीचे छुपा दें और गोपाल नायक को बुला लें और उससे कह दें कि खुसरू बीमार है, जब तक उसे आराम न हो तब तक तुम्हारा गाना हुआ करे। गोपाल आया सौर उसने गाना गाया। अमीर खुसरू गोपाल के आने से

पहिले गये और तख्त के नीचे छुप गये। ६ दिन तक यही कार्य-क्रम चलता रहा। अमीर ख़ुसरू, जो अब तक चुप थे, दरबार में आये। गोपाल नायक ने उनसे गाने के लिए कहा। अमीर ख़ुसरू ने कहा मैं ईरान से अभी हिंदुस्तान में आया हूँ और हिंदुस्तान की गान-विद्या से मनोरंजन करने आया हूँ। मैं आप जैसा आचार्य नहीं हूँ कि सिर पर कल्मा बाँधूं। पहले आप गाएँ उसके पीछे मुझे जो कुछ आता है, मैं सुना दूंगा। गोपाल ने गाना आरंभ किया। जो गीत और जो स्वर तथा जो अलाप गोपाल ने सुनाई, अमीर ख़ुसरू ने कहा कि बहुत पहले से मैं इन्हें जानता हूँ। गोपाल ने कहा—अच्छा सुनाइये। अमीर ख़ुसरू ने हर हिंदुस्तानी राग के मुकाबले में फारसी के राग सुनाये। गोपाल दंग रह गया। इसके बाद ख़ुसरू ने कहा कि यह तो मैंने लोकविख्यात फारसी के गाने सुनाये हैं। अब वे गाने सुनिये जिनकी मैंने स्वयं रचना की है। गोपाल और सारी सभा सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। मैदान अमीर ख़ुसरू के हाथ रहा। वास्तव में बात तो यह थी कि ख़ुसरू गान विद्या में इतने निपुण थे कि एक बार सुनकर उसी के मिलते-जुलते फारसी के गीत बना देते थे और गा देते थे[१]।"

उपर्युक्त उल्लेख से ज्ञात होता है, गोपाल नायक अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में विद्यमान था और उसकी अमीर ख़ुसरू से गायन-प्रतियोगिता हुई थी। उस काल में प्रतियोगिता की विधि बतलाते हुए फकीरुल्ला ने लिखा है, प्रतियोगी अपनी पगड़ी पर लकड़ी का एक टुकड़ा (डंडा, डंडी, डाँडी) बाँध कर

---

[१] मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० ६५

चलता था; जो इस बात का चिह्न समझा जाता था कि कोई भी व्यक्ति उससे खुली प्रतियोगिता कर सकता है। इस संबंध में फकीरुल्ला का कथन है—

अमीर ख़ुसरू की विद्या की ख्याति दुनियाँ के इस छोर से उस छोर तक फैली हुई थी। नायक गोपाल उसना नाम सुनकर डंडा बाँध कर आया[१]।

बैजू के एक ध्रुपद में भी गोपाल नायक के डाँडी बाँधकर आने और संगीत-प्रतियोगिता करने का उल्लेख हुआ है; किंतु उससे ऐसा संकेत मिलता है कि वह प्रतियोगिता ख़ुसरू से नहीं, बल्कि स्वयं बैजू से हुई थी। वह ध्रुपद इस प्रकार है—

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

विद्या सोई भली, जासैं पाइयत है री (नंद) लाल।
कुंज-भवन में आय बैठे, रीझि दई मृगछाल (बनमाल ?)॥
गुपत सप्त, प्रगट छत्तीस, डाँडी बाँध आयौ गोपाल।
'बैजू' के गाये तैं सप्त सुर भूल गये, पिघले पाषान, बूढ़े ताल[२]॥

बैजू के और भी कई ध्रुपद मिलते हैं, जिनमें गोपाल नायक अथवा गोपाललाल नामक किसी संगीतज्ञ को संबोधन किया गया है और उसे गायन-प्रतियोगिता के लिए ललकारा गया है। ऐसा कहा जाता है, उस प्रतियोगिता में बैजू ने अपने अलौकिक संगीत के प्रभाव से जंगल से हिरनों को बुलाना, पत्थर पिघलाना, पिघले हुए पत्थर में अपने ताल वाद्य को दबाना, असमय में मेह बरसाना आदि चमत्कारपूर्ण क्रियाएँ की थीं।

---

१ मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० ६४

२ बैजू का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ६३

आजकल के वैज्ञानिक युग में ऐसी घटनाओं पर विश्वास नहीं किया जाता है; किंतु अब विज्ञान ने ही उक्त असंभवप्राय घटनाएँ संभव कर दिखलाई हैं। पशु-पक्षियों पर संगीत का प्रभाव स्पष्ट ही दृष्टिगोचर होता है। सँपेरे के बीन-वादन से विषधर सर्पों को मुग्ध होता हुआ सब ने देखा है। आजकल पाश्चात्य देशों की गोशालाओं में संगीत की ध्वनि के साथ दुग्ध-दोहन किया जाता है। इसके फल स्वरूप संगीत की स्वर-लहरी से आनंदित गौएँ अपनी साधारण मात्रा से कहीं अधिक दूध देती हैं। अफ्रीका के बीहड़ बनों में संगीत द्वारा जंगली पशुओं को मोहित करने का सफल प्रयास किया जा चुका है। इसलिए अब जंगली हिरनों पर संगीत का प्रभाव कोई असंभव बात नहीं रह गई है। रूस आदि देशों के वैज्ञानिकों ने असमय में मेह बरसाने की क्रिया का आविष्कार कर लिया है। संभव है, भविष्य में वे संगीत से भी मेह बरसाने की विधि बतला दें। पत्थर जैसी कठिन धातु का संगीत के प्रभाव से पिघल जाना असंभव ज्ञात होता है; किंतु वर्तमान वैज्ञानिकों ने इसकी संभावना भी सिद्ध कर दी है। अमरीका की एक संस्था ने ध्वनि द्वारा विभिन्न धातुओं को पिघलाकर उन्हें जोड़ने की विधि का आविष्कार किया है ! इस प्रकार संगीत का जो प्रभाव अलौकिक समझा जाता था, वह अब विज्ञान ने ही सर्वथा लौकिक सिद्ध कर दिया है।

बैजू की संगीत कला के अद्भुत प्रभाव विषयक कतिपय ध्रुपदों के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

१. विद्या तेरी रे नायक गोपाल।
'नायक बैजू' पिघलाए पाथर, उँमगाए ताल॥

२. कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाल नायक,
ऐसी विद्या सौं को लड़ैं, पाहन पिघलावै॥

३. कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाललाल,
सारंग बौरायौ, पाथर मधि डूबे ताल, पाहन पिघलायौ ॥

४. कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाल नायक,
हिरन बुलाये, पाहन पिघलाये, तेरी लाख मेरी एक[1] ॥

उपर्युक्त उल्लेखों के समर्थन में तानसेन के भी कई ध्रुपद मिलते हैं, जिनमें गोपाल नायक के लिए बैजू बावरा द्वारा पत्थर पिघलाने आदि का कथन हुआ है। उन ध्रुपदों के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

१. सप्त प्रगट, सप्त गुपत नायक गोपाल ध्यायौ,
'तानसेन' ताकौं बैजू पाषान पिघलायौ ॥

२. सप्त गुपत, सप्त प्रगट नायक गोपाल ध्यायौ,
ब्रह्मा वेद उचरायौ, सारंग बौरायौ,
गायन-भाव तैं री चंद्र गगन ठहरायौ।
जित-तित सृष्टि गुनी, ब्रह्मा-वेद-रुद्र-मुनी,
मतौ उपजि कैं गायौ, पाषान पिघलायौ।
कहै प्रभु 'तानसेन' जिनही रचि-पचि गायौ,
तिनही रिझायौ[2] ॥

इसके साथ ही गोपाल नायक की छाप के भी कुछ ऐसे ध्रुपद मिलते हैं, जिनमें सिकंदरशाह और राजा राम के नामों का उल्लेख हुआ है। उन ध्रुपदों के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

---

[1] बैजू का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ६२, ६५, ६७

[2] संगीत-सम्राट तानसेन, पृ० ६७ ध्रुपद संख्या १४२, १४३

१. दिल्लीपति नरेन्द्र सिकंदर साह,
जाके डर से ध्वनि पै हिलायौ।
कहत 'नायक गोपाल' चिरंजीव रहौ पादसाह,
गहन बन तैं आप मृग धायौ[1] ॥

२. मस्तक कुंडल डुल्ल रे, धारू गावत नायक गोपाल रे।
राजा राम चतुर सुजान रे, तुम चंचल अलक सुग्रान रे[2] ॥

इन उल्लेखों का संबंध सिकंदर लोदी और रामचंद्र बघेला से है, जिनका समय सं० १५५० से १६०० तक के लगभग है। इससे ज्ञात होता है कि गोपाल नायक सिकंदर लोदी और रामचंद्र बघेला के काल में विद्यमान था और उसका समय सं० १५५० से १६०० तक है; जब कि फकीरुल्ला ने गोपाल नायक की विद्यमानता १४ वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी के समय में बतलाई है। फकीरुल्ला के लेखानुसार गोपाल नायक की संगीत-प्रतियोगिता अमीर खुसरू के साथ हुई थी; जब कि बैजू और तानसेन की रचनाओं के अंतःसाक्ष्य से वह स्वयं बैजू के साथ हुई ज्ञात होती है।

गोपाल नायक के रचना-संग्रह में एक ध्रुपद मुगल सम्राट अकबर से संबंधित भी मिलता है। उसका आरंभिक अंश इस इस प्रकार है—

दिल्लीपति नरेन्द्र अकबर साह,
जाकों डर डरैं धरती पुहुप माल हलायौ[3]।

---

[1] श्रीहरिनारायण मुखर्जी कृत 'ध्रुपद स्वर लिपि' में संकलित ध्रुपद

[2] गोपाल नायक का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ६, ७

[3] संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ, पृ० ४६

उक्त ध्रुपद के कारण श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी का कहना है कि गोपाल नायक अलाउद्दीन खिलजी के समय में नहीं था, बल्कि अकबर के समय में था और उसकी गायन-प्रतियोगिता अमीर खुसरू से न होकर बैजू से हुई थी[१]।

हमारे विचार से उक्त ध्रुपद का 'अकबर साह' पूर्व उल्लिखित ध्रुपद के 'सिकंदर साह' का पाठ-भेद मात्र है। वैसे भी 'दिल्लीपति' विशेषण फतहपुर सीकरी और आगरा में अपनी राजधानी रखने वाले अकबर की अपेक्षा सिकंदर लोदी के लिए अधिक उपयुक्त हो सकता है। इसलिए गोपाल नायक को अकबर कालीन कहना प्रमाण-सापेक्ष है।

गोपाल नायक और अमीर खुसरू की गायन-प्रतियोगिता की चर्चा पहिले की जा चुकी है। इसके साथ ही यह भी लिखा जा चुका है कि इसकी सत्यता में बड़े-बड़े संगीतज्ञ विद्वान भी विश्वास करते हैं। फिर भी यदि हम उस प्रतिद्वंदिता को कोरी किंवदंती ही मान लें और यह समझ लें कि दक्षिण का वह महान् संगीतज्ञ शायद ही दिल्ली गया हो; तब भी गोपाल नायक को अकबर कालीन कदापि नहीं माना जा सकता है। वह सम्राट अकबर से प्राय: २५० वर्ष पूर्व अलाउद्दीन खिलजी के शासन-काल में ही हुआ था[२]।

सं० १४८२ के लगभग दक्षिण देशीय विजयनगर राज्य के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ कल्लिनाथ ने शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' की संस्कृत भाषा में विशद टीका लिखी थी। उसके तालाध्याय

---

[१] संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ, पृ० १४

[२] मानसिंह और मान कुतूहल, पृ० ६४

में कुडुक्क ताल का वर्णन करते हुए कल्लिनाथ ने गोपाल नायक का इस प्रकार उल्लेख किया है—

कुडुक्क तालस्तु गोपाल नायकेन ।
राग कदंबैरेवगुप्तवद प्रयुक्तः ॥

—संगीत रत्नाकर, पृ० ४३३

उपर्युक्त उल्लेख से श्री विष्णु नारायण भातखंडे का अनुमान है कि कल्लिनाथ के समय में गोपाल नायक दक्षिण में काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था । अतः वह कल्लिनाथ से एक शताब्दी पूर्व अलाउद्दीन खिलजी और अमीर खुसरू का ही समकालीन रहा होगा[1] ।

गोपाल संबंधी परस्पर भिन्न उक्त दो प्रकार के उल्लेखों से यह समझा जा सकता है कि इस नाम के दो संगीतशास्त्री भिन्न-भिन्न समय में हुए थे । प्रथम गोपाल दाक्षिणात्य था, जो अलाउद्दीन खिलजी के समय में विद्यमान था और अमीर खुसरू के साथ उसकी संगीत-प्रतियोगिता हुई थी । द्वितीय गोपाल सिकंदर लोदी और रामचंद्र बघेला के काल में वर्तमान था और बैजू के साथ उसकी गायन-प्रतिद्वंदिता हुई थी ।

बैजू के उपलब्ध ध्रुपदों में किसी में से भी मानसिंह तोमर का उल्लेख नहीं मिला है, किंतु उनकी गूजरी रानी मृगनयनी का कतिपय ध्रुपदों में इस प्रकार नामोल्लेख हुआ है—

१. सुंदर अति नवीन प्रवीन महा चतुर,
मृगनैनी मनहरनी चंपकबरनी नार ।
२. सुंदर मृगनैनी कामिनि, रति मानत पति संग[2] ।

---

[1] उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, पृ० १४

[2] बैजू का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ६८, ७७

बैजू के नाम से उपलब्ध दशहरा की बधाई के एक ध्रुपद में भी राजा राम का उल्लेख हुआ है। इससे रीवां नरेश रामचंद्र बघेला का संकेत इस प्रकार मिलता है—

राग हमीर, चौताल

दसहरा मुबारिक होय तुमकौं, संतति-संपति सहित समझाऊँ।
गीत गाय-गाय आनंद बधाये, राजा राम रहस-रहस कर गाऊँ॥
लंका जीत राम घर आये, सीता मिलन सुखी सोहिलौ सुनाऊँ।
'बैजू' के प्रभु घर-घर आज बधायौ, भक्ति-दान वर पाऊँ[1]॥

उधर तानसेन के दो ध्रुपदों में गोपाल को संबोधन किया गया है, जिससे गोपाल का अस्तित्व-काल तानसेन के समय तक सिद्ध होता है। उक्त ध्रुपदों के कुछ अंश इस प्रकार हैं—

१. **कहै 'मियाँ तानसेन' सुनो हो गोपाललाल,**
नाद-सागर नाद-समुद्र अपार॥

२. **तीन द्रुत दविराम कहैं, सुनियै नायक गोपाल।**
गुरू और गुरु पुलित लघु, महा विषम यह ताल[2]॥

इन उल्लेखों से सिद्ध होता है कि जहाँ बैजू का अस्तित्व-काल मानसिंह तोमर से रामचंद्र बघेला के शासन-काल तक है, वहाँ द्वितीय गोपाल का समय सिकंदर लोदी से तानसेन के समय तक पहुँचता है। इस प्रकार बैजू द्वितीय गोपाल और तानसेन से आयु में कुछ बड़ा ज्ञात होता है; किंतु तीनों की समकालीनता अवश्य सिद्ध होती है। गोपाल नामक दो संगीतज्ञों की जीवन-घटनाओं को भ्रम वश मिला देने से ही उनके काल के संबंध में भ्रम उत्पन्न हो जाता है।

---

[1] बैजू का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ४२

[2] संगीत-सम्राट तानसेन, पृ० १०१, १६८

बैजू और बक्सू की एकता—

पहले लिखा जा चुका है कि अबुलफजल और फकीरुल्ला ने मानसिंह तोमर के दरबारी गायकों में बक्सू का उल्लेख किया है, बैजू का नहीं। उन विख्यात लेखकों ने बक्सू के गायन की बड़ी प्रशंसा की है, जब कि उन्होंने बैजू का नाम तक नहीं लिखा है। उनकी बैजू संबंधी इस उपेक्षा का रहस्य अब तक समझ में नहीं आया है। हमने इस पर विचार करते हुए इसके संभावित कारणों में से एक यह बतलाया था कि शायद बैजू का उल्लेख भ्रम वश किसी दूसरे नाम से किया गया है। कहने की आवयश्कता नहीं कि वह दूसरा नाम बक्सू ही हो सकता है। फिर क्या बैजू और बक्सू एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं !

इस प्रकार की कल्पना असंभव तो नहीं हो सकती, किंतु इसके समर्थन में यथेष्ट प्रमाणों का होना आवश्यक है। हमने कई वर्ष पहले इसकी चर्चा अपने कुछ संगीतज्ञ मित्रों से की थी, किंतु उनसे कोई समाधानकारक उत्तर नहीं मिल सका। डा० मोतीचंद जैसे विख्यात इतिहासज्ञ और कला मर्मज्ञ विद्वान से भी इस प्रसंग पर वार्ता की थी। उन्होंने हमारे अनुमान की संपुष्टि तो की, किंतु इसके समर्थन में वे कोई ऐतिहासिक उल्लेख अथवा विश्वसनीय प्रमाण नहीं बतला सके। वैसे उन्होंने स्वयं भी अपने एक लेख में हमारे उक्त अनुमान को इस प्रकार दोहराया था—

शायद बैजू बावरा सूफी संत बक्सू हो, जो तानसेन से एक पीढ़ी पहिले हुआ था[1]।

---

[1] नवनीत (अप्रैल १९५६)

हमने भी अपने बैजू संबंधी लेखों में बक्सू और बैजू की आनुमानिक एकता पर प्रकाश डाला था[1]। किंतु अभी तक इसका कोई निश्चित उत्तर प्राप्त नहीं हो सका है।

बैजू और बक्सू की एकता के समर्थन में कतिपय प्रबल युक्तियाँ भी प्रस्तुत की जा सकती हैं। पहली यह कि फारसी लिपि की घसीट लिखावट में बैजू को आसानी से 'बख्शू' पढ़ा जा सकता है। दूसरी यह कि उनकी संगीतज्ञता और गायन-शैली तथा उनके काल और आश्रयदाता में अद्भुत साम्य है। इस प्रकार बक्सू के ही बैजू होने की बात असंभव तो नहीं मालूम होती है; किंतु इसके समर्थन में अभी विश्वसनीय प्रमाणों का अभाव है।

बक्सू और बैजू को एक ही व्यक्ति मानने में कई बाधाएँ भी हैं। पहली यह कि बैजू हिंदू और संभवतः ब्राह्मण था। वह हिंदू देवी-देवताओं का अत्यंत भक्त था, जैसा उसके अनेक ध्रुपदों से प्रकट होता है। इसके विरुद्ध बक्सू या बख्शू अपने नाम से मुसलमान जान पड़ता है। दोनों को एक व्यक्ति समझने से यह मानना होगा कि बैजू भी तानसेन की भाँति अपने उत्तर जीवन में मुसलमान हो गया था! तन्ना मिश्र के मुसलमान होकर तानसेन नाम से विख्यात होने की किंवदंती तो प्रसिद्ध है, यद्यपि इसकी प्रामाणिकता सिद्ध नहीं है; किंतु बैजू के मुसलमान होकर बक्सू नाम से प्रसिद्ध होने की कोई किंवदंती भी प्रचलित नहीं है। दूसरी बाधा यह है कि संगीत के अनेक विद्वानों ने बैजू और बक्सू को पृथक्-पृथक् संगीतज्ञ और दोनों को मानसिंह

---

[1] साप्ताहिक हिंदुस्तान (१७ जून १९५६), सरस्वती (अगस्त १९५७) संगीत कला विहार (अक्टूबर १९५७).

तोमर के गायक माना है। संगीत के ग्रंथों में भी बैजू और बक्सू की रचनाओं का पृथक्-पृथक् संकलन किया गया है। फिर भी इस पर अंतिम रूप से कहना अभी संभव नहीं है। यह विषय अभी गंभीर अनुसंधान और प्रामाणिक सामग्री की अपेक्षा रखता है।

उत्तर भारतीय संगीत की महत्त्वपूर्ण रचना 'राग कल्पद्रुम' में अनेक संगीतज्ञों की रचनाओं का संकलन हुआ है। इसमें बैजू और बक्सू के ध्रुपदों को पृथक्-पृथक् संकलित किया गया है। इस संकलन में बैजू के ध्रुपदों की संख्या अधिक है और बक्सू की बहुत कम है। संगीत के अन्य ग्रंथों में भी बक्सू की रचनाएँ बैजू की अपेक्षा कम परिमाण में उपलब्ध होती हैं। इससे यह अनुमान होता है कि बक्सू ने अधिक ध्रुपदों की रचना नहीं की होगी; किंतु श्री चंद्रशेखर पंत ने इसके विरुद्ध निम्न लिखित कथन किया है—

"शाहजहाँ के समय में सर्वश्रेष्ठ ध्रुपदों की विशेष छान-बीन हुई और उसमें यह निर्णय किया कि उस समय के ध्रुपदकारों में नायक बक्सू के ही ध्रुपद सर्वोत्कृष्ट हैं। अतः शाहजहाँ की आज्ञानुसार नायक बक्सू के सब प्रामाणिक ध्रुपद एकत्रित किये गये। उनमें भी जो एक हजार सर्वोत्तम निकले, उनका एक बृहत् संकलन किया गया और चार राग तथा चालीस रागनियों में विभाजित करके फारसी भूमिका सहित प्रकाशित किया गया। इसके 'राग-ए-हिंदी' 'सहस्र रस' 'एक हजार ध्रुपद' 'रागमाला' इत्यादि अनेक नाम रखे गये। इस ग्रंथ की पांडुलिपियाँ इंगलैंड के इंडिया आफिस तथा बौडलियन पुस्तकालयों में मौजूद हैं[1]।"

[1] आकाश वाणी, लखनऊ से प्रसारित 'उत्तर भारतीय संगीत के ध्रुपद-रचयिता' नामक वार्ता।

यदि उक्त कथन ठीक है, तो बक्सू की महत्त्वपूर्ण रचनाओं की प्रतिलिपियाँ विदेश से तत्काल प्राप्त करने की आवश्यकता है। इन रचनाओं के अध्ययन से जहाँ बैजू और बक्सू की एकता अथवा पृथक्ता का अंतिम रूप से निर्णय किया जा सकता है, वहाँ उत्तर भारतीय संगीत और हिंदी साहित्य की विकास-परंपराओं के कुछ खोए हुए सूत्र भी संकलित किये जा सकते हैं। बक्सू के समस्त ध्रुपद ब्रजभाषा में रचे गये थे, अतः सूर-पूर्व की की भाषा और काव्य के अध्ययनार्थ उनका अत्यंत महत्त्व है। बक्सू की उन बहुमूल्य रचनाओं के सुसंपादित संस्करण से निश्चय ही हिंदी साहित्य की समृद्धि होगी।

जब तक यह नहीं होता है, तब तक बक्सू की कतिपय उपलब्ध रचनाओं पर ही संतोष करना होगा। ऐसी कुछ रचनाएँ इस पुस्तक के परिशिष्ट में भी दी गई हैं। जहाँ तक बैजू और बक्सू की एकता अथवा पृथक्ता का प्रश्न है, हम अभी अंतिम रूप से निर्णय करने की स्थिति में नहीं हैं; अतः फिलहाल उन्हें एक ही काल में विद्यमान दो पृथक्-पृथक् संगीतज्ञ मानना ही उचित होगा।

जीवन-वृत्तांत का निष्कर्ष—

बैजू और गोपाल के जीवन-वृत्तांत का जो विवेचन अब तक किया गया है, वह उनके प्रामाणिक और निर्विवाद इतिवृत्त को निश्चित करने में अधिक सहायक नहीं होता है। फिर भी उसके निष्कर्ष स्वरूप कुछ ऐसे सूत्र संकलित किये जा सकते हैं, जो उन विख्यात संगीत-शास्त्रियों की जीवन-गाथाओं का सामान्य परिचय प्रस्तुत कर सकें।

हम इन्हीं सूत्रों के आधार पर बैजू और गोपाल की जीवनियों की साधारण रूप-रेखा उपस्थित करते हैं—

बैजू की जीवनी—

बैजू का जन्म गुजरात के किसी ग्राम में हुआ था। उसका जन्म-संवत् १५०० के लगभग अनुमानित होता है। वह किस वर्ण और जाति का था, इसका निश्चय नहीं है। किंवदंती के अनुसार वह ब्राह्मण वर्ण का माना जाता है। उसका पूरा नाम बैजनाथ अथवा ब्रजलाल कहा जाता है, किंतु वह बैजू के नाम से ही प्रसिद्ध है। उसकी रचनाओं में भी 'बैजू' अथवा 'बैजू बावरा' की छाप मिलती है।

उसके माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के और संभवतः कृष्णोपासक थे। उनके कारण आरंभ से ही बैजू में धार्मिक संस्कार और कृष्ण-भक्ति के अंकुर उत्पन्न हुए थे। ऐसा समझा जाता है, उसके पिता की मृत्यु बैजू की बाल्यावस्था में हुई थी, और उसकी अनाथ माता उसे लेकर श्रीकृष्ण के लीला-धाम ब्रज में जाकर रहने लगी थी। ब्रज के धार्मिक और सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव बैजू की प्रकृति के अनुकूल सिद्ध हुआ। वहाँ पर उसकी शिक्षा का प्रबंध किया गया और उसने संगीत-कला में विशेष योग्यता प्राप्त की। वह शीघ्र ही संगीत-शास्त्री और उत्तम गायक के रूप में प्रसिद्ध हो गया। उसका संगीत-गुरु कौन था, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है। किंवदंती के अनुसार वृंदावन के संत स्वामी हरिदास को बैजू का संगीत-गुरु कहा जाता है; किंतु काल-क्रम से यह कथन समीचीन ज्ञात नहीं होता है।

संगीत कला में पारांगत होने पर वह पहिले संभवतः चंदेरी के शासक राजसिंह कछवाहा के आश्रय में रहा था; किंतु उसे वहाँ पर अपनी कला की उन्नति के लिए उपयुक्त क्षेत्र ज्ञात नहीं हुआ। उन्हीं दिनों ग्वालियर के कलाप्रिय नरेश मानसिंह

तोमर की संगीतज्ञता और उनके द्वारा भारतीय संगीत को प्रश्रय देने की बड़ी ख्याति थी। बैजू चंदेरी से ग्वालियर चला गया और मानसिंह तोमर का दरबारी गायक नियुक्त हुआ। वह सं० १५५० के लगभग ग्वालियर गया था।

ग्वालियर में बैजू को अपनी संगीत कला के विकास का उपयुक्त वातावरण और समुचित क्षेत्र मिला। तोमर नरेश ने आदर पूर्वक उसे अपने दरबार में स्थान दिया था। बैजू की संगीत-साधना से प्रेरणा प्राप्त कर मानसिंह ने भारतीय संगीत के पुनरुद्धार करने की चेष्टा की। उसने बैजू के सहयोग से ध्रुपद की गायकी का आविष्कार और प्रचार करने का महत्व-पूर्ण कार्य किया, जिसके लिए संगीत-जगत् में उसका नाम अमर हो गया है। बैजू ने मानसिंह तोमर की कलाप्रिय गूजरी रानी मृगनयनी को भी संगीत की उच्च शिक्षा दी थी। उसने अपनी विलक्षण प्रतिभा से गूजरी रानी के लिए कई नये रागों का आविष्कार किया, जिनमें 'मंगल गूजरी' और 'गूजरी टोड़ी' विशेष प्रसिद्ध हैं।

जिन दिनों बैजू ग्वालियर में था, उन दिनों मानसिंह तोमर से प्रोत्साहन प्राप्त कर अनेक विख्यात संगीतज्ञ और गायक गण भी वहाँ एकत्रित थे। उनमें बक्सू, महमूद, कर्ण और पांडवीय के नाम इतिहास प्रसिद्ध हैं। उन महान् संगीतज्ञों ने ग्वालियर नरेश द्वारा आविष्कृत संगीत की ध्रुपद शैली को अपने गायन से लोकप्रिय बना दिया था। बैजू ने ध्रुपद की गायकी के लिए बहुसंख्यक गीतों की भी रचना की थी। वे संगीत के विविध ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं।

मानसिंह तोमर के प्रोत्साहन और प्रयत्न से ग्वालियर संगीत कला का विख्यात केन्द्र बन गया था। बैजू की प्रेरणा से

मानसिंह ने ग्वालियर में एक संगीत-विद्यालय की स्थापना भी की थी, जिसमें कई सुप्रसिद्ध संगीत-शास्त्री संगीत की शिक्षा देते थे। उस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले संगीतज्ञ विद्वानों ने अनेक वर्षों तक उत्तरी भारत के संगीत पर अपना प्रभुत्व बनाये रखा था। कहते हैं, संगीत-सम्राट तानसेन ने भी उसी विद्यालय में संगीत-शिक्षा प्राप्त की थी।

मानसिंह तोमर ने ३० वर्ष तक ग्वालियर पर शासन किया था। अंत में सं० १५७३ में उस महान् कलाविद् नरेश का देहावसान होगया। उसके बाद उसका पुत्र विक्रमाजीत ग्वालियर का राजा हुआ। वह दिल्ली के सुलतान इब्राहीम लोदी से पराजित हो गया, जिसके फल स्वरूप ग्वालियर तोमरों के अधिकार से निकल गया। उस परिवर्तन से ग्वालियर का राजनैतिक महत्व तो नष्ट हो गया, किंतु उसका संगीत विषयक महत्व फिर भी थोड़ा-बहुत बना रहा। मुगल-सम्राट अकबर के जगविख्यात् ३६ संगीतज्ञों में से १५ ग्वालियर निवासी थे। इससे समझा जा सकता है कि संगीत के क्षेत्र में ग्वालियर ने किस प्रकार अपना स्थान बना लिया था। ग्वालियर की उस गौरव-वृद्धि के कारणों में मानसिंह तोमर के प्रोत्साहन के साथ बैजू की साधना भी सम्मिलित है।

यह इतिहास प्रसिद्ध बात है कि मानसिंह तोमर की मृत्यु के अनंतर जब विक्रमाजीत से ग्वालियर का राज्याधिकार छिन गया, तब वहाँ के अनेक विख्यात संगीतज्ञ निराश्रय होकर ग्वालियर छोड़ने को विवश हुए थे। उसी आपत्काल में बैजू भी संभवतः ग्वालियर से अन्यत्र चला गया था। वह कहाँ गया, इसके विषय में कोई निश्चित बात नहीं कही जा सकती है। कुछ विद्वानों का अनुमान है, वह भी बक्सू की भाँति गुजरात के

संगीतप्रिय शासक बहादुरशाह का आश्रित होगया था। बैजू का जन्म गुजरात में हुआ था, अतः यह असंभव नहीं है कि उसने अंतिम काल अपनी जन्म-भूमि में ही बिताना उचित समझा हो।

बैजू की एक रचना 'रागिनी बहादुरी टोड़ी' में उपलब्ध है। उसमें किसी संगीतज्ञ नरेश की प्रशंसा की गई है। यद्यपि उसमें किसी राजा अथवा बादशाह का नामोल्लेख नहीं है, तथापि उसकी विशिष्ट रागिनी के कारण वह बहादुरशाह के लिए रची हुई हो सकती है। वह ध्रुपद इस प्रकार है—

रागिनी बहादुरी टोड़ी

दीनौं करतार तुम्हैं राज-साज की सकल सोभा,
ऐसी नाँहि और कोऊ जानी।
साहब सुजान समझ तान की राखत हौ तुम,
गुनी आय गावत हैं नीकी सुद्ध बानी॥
जानत हैं नीके भाग आपने 'बैजू',
रहत हैं रीझि जगत में तुमारी अमीर राव-रानी।
देत हौ दान-सनमान, दुख-दारिद्र बिड़ारन,
हमरे कारन कियौ तुम हू कौं अब साहब फिरा निसानी[१]॥

हम पहले लिख चुके हैं कि बैजू कृत दशहरा की बधाई के एक ध्रुपद में 'राजा राम' का इस प्रकार उल्लेख हुआ है—

राग हमीर चौताल

दसहरा मुबारिक होत तुमकौं,
संतति-संपति सहित समझाऊँ।
गीत गाय-गाय आनंद बधाये,
राजा राम रहस-रहस करि गाऊँ॥

---

१. बैजू का रचना-संग्रह, ध्रुपद सं० ४१

यदि उक्त उल्लेख का अभिप्राय रीवा-नरेश राजा रामचंद्र से है, तब मानसिंह तोमर की मृत्यु के पश्चात् बैजू का रामचंद्र बघेला के दरबार में जाना भी सिद्ध होता है। रीवा-नरेश रामचंद्र बघेला द्वारा अनेक संगीतज्ञों को प्रश्रय और प्रोत्साहन दिये जाने की बात इतिहास-प्रसिद्ध है। संगीत-साम्राट तानसेन भी अकबरी दरबार में जाने से पूर्व रामचंद्र बघेला के दरबार में ही था। इसलिए यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि ग्वालियर से जाने के पश्चात् बैजू गुजरात गया, या बांधवगढ़; अथवा कहीं अन्यत्र गया।

बैजू के अनेक ध्रुपदों में गोपाल नामक किसी विख्यात संगीतज्ञ के संबोधन और उससे संगीत-प्रतियोगिता होने का उल्लेख मिलता है। इस संबंध में लिखा जा चुका है कि वह संगीत-जगत् में प्रसिद्ध द्वितीय गोपाल है, जो सिकंदर लोदी और रामचंद्र बघेला के शासन-काल में विद्यमान था। ऐसा ज्ञात होता है, जब बैजू की ढलती आयु थी और मानसिंह तोमर की मृत्यु के अनंतर वह ग्वालियर छोड़ कर कहीं अन्यत्र निवास करता था; तब उस गोपाल का उदय और अभ्युदय हुआ था। वह नवोदित कलावंत अपनी संगीतज्ञता के गर्व में बैजू जैसे प्रौढ़ संगीत-शास्त्री से भिड़ गया; किंतु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। बैजू और तानसेन के कई ध्रुपदों के अंतःसाक्ष्य से सिद्ध होता है, कि उस प्रतियोगिता में बैजू ने अपने अलौकिक संगीत-ज्ञान का परिचय दिया था। उस अवसर पर संगीत-साधक बैजू ने अपने अद्भुत संगीत के प्रभाव से जंगल से हिरनों को बुला कर, पत्थर पिघला कर और उसमें अपने ताल वाद्य को बंद करके गोपाल को पराजित तथा उपस्थित व्यक्तियों को चकित कर दिया था। किंवदंतियों के अनुसार वह गोपाल पहिले बैजू का शिष्य था,

बाद में वह कृतघ्नता पूर्वक अपने गुरु से ही प्रतिद्वंदिता करने लगा था। हम लिख चुके हैं, गोपाल को बैजू का शिष्य बतलाना प्रामाणिक कथन ज्ञात नहीं होता है। वह बैजू के मुकाबले का कोई दूसरा संगीत-शास्त्री था।

बैजू और बक्सू के जीवन-वृत्तांत में इतना अधिक साम्य है कि उन दोनों के एक ही व्यक्ति होने का संदेह किया जाता है। यदि बैजू और बक्सू की एकता प्रमाणित हो जाती है, तब बैजू की जीवनी की अधिक स्पष्ट रूप-रेखा प्रस्तुत की जा सकती है। तब उसका जीवन-वृत्त निश्चित करने के लिए आनुमानिक कथनों की आवश्यकता नहीं रहेगी।

बैजू की मृत्यु कब और कहाँ हुई, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है। इतना निश्चित है कि उसने दीर्घायु प्राप्त की थी। उसका देहावसान सं० १६०० के लगभग अनुमानित होता है।

गोपाल की जीवनी—

भारतीय संगीतज्ञों में गोपाल नायक का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उससे संबंधित अनेक किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं, जिनमें से अधिकांश की प्रामाणिकता सिद्ध नहीं होती है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस नाम का कोई एक संगीतज्ञ नहीं था, बल्कि विभिन्न कालों में कई संगीतज्ञ हुए थे। उन सबकी जीवन-घटनाएँ किंवदंतियों के रूप में परंपरा से चली आ रही हैं। उन्हें भ्रम वश आपस में मिला दिया जाता है और किसी एक गोपाल से ही संबंधित मान लिया जाता है। इससे जो ऐतिहासिक उलझन उत्पन्न होती है, वह उन घटनाओं की प्रामाणिकता में संदेह उत्पन्न करती है। इधर गोपाल के संबंध में कुछ अनुसंधान

हुआ है। उससे सिद्ध होता है कि इस नाम के कम से कम दो संगीतज्ञ अवश्य हुए थे। उनका अस्तित्व-काल और जीवन-वृत्तांत भिन्न-भिन्न हैं; किंतु किंवदंतियों के कारण उनका घोल-मेल हो गया है। हम उक्त दोनों गोपालों की संक्षिप्त जीवनियाँ देने की चेष्टा करेंगे, ताकि उनके जीवन-वृत्तांत की अप्रामाणिकता दूर होकर कुछ प्रामाणिक तथ्य प्रकाश में आ सकें।

प्रथम गोपाल—जो गोपाल नायक के नाम से प्रसिद्ध है, दक्षिणी ब्राह्मण था। वह दाक्षिणात्य संगीत का महान् ज्ञाता और विख्यात गायक था। उसका जन्म-काल सं० १३०० के लगभग अनुमानित होता है। जब अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से दक्षिण के सुप्रसिद्ध देवगिरि राज्य का पतन हुआ; तब अनेक दक्षिणी विद्वानों, गुणियों और कलाकारों को दिल्ली पहुँच कर राज्याश्रय प्राप्त करना पड़ा था। ऐसी प्रसिद्धि है, गोपाल नायक भी उसी समय दिल्ली जाकर अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में उपस्थित हुआ था। इस प्रकार उसका दिल्ली जाना अलाउद्दीन खिलजी के शासन-काल के आरंभिक वर्ष सं० १३५३ के लगभग सिद्ध होता है।

उस काल के संगीत-ग्रंथों में 'प्रबंध' का विवेचन मिलता है, किंतु उनमें 'ध्रुपद' का उल्लेख नहीं है। इससे ज्ञात होता है, गोपाल नायक ध्रुपद शैली का गायक नहीं था। ध्रुपद का आविष्कार और प्रचार गोपाल नायक के प्रायः दो शताब्दी पश्चात् उत्तर भारत में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर द्वारा हुआ माना जाता है। गोपाल नायक जिस संगीत-पद्धति का गायक था, उसके 'प्रबंध' और 'गीत' उस काल की संस्कृत, तामिल, तेलगु आदि भाषाओं में बहुतायत से मिलते हैं।

गोपाल नायक से प्राय: एक शताब्दी पश्चात् सं० १४८२ के लगभग दक्षिण देशीय विजयनगर राज्य के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ कल्लिनाथ ने शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' की संस्कृत भाषा में विस्तृत टीका लिखी थी। उसके तालाध्याय में कल्लिनाथ ने गोपाल नायक का प्रशंसापूर्ण शब्दों में स्मरण किया है। इससे सिद्ध होता है, गोपाल नायक कल्लिनाथ के समय से पहिले ही दाक्षिणात्य संगीतज्ञों में प्रसिद्ध हो चुका था।

जिस समय गोपाल नायक अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में उपस्थित हुआ, उस समय वहाँ पर अमीर खुसरू की विद्वता और संगीतज्ञता की धाक थी। फकीरुल्ला ने लिखा है, गोपाल नायक ने अमीर खुसरू को संगीत-प्रतियोगिता की चुनौती दी। खुसरू गोपाल के अपार संगीत-ज्ञान से हतप्रभ हो गया, किंतु उसने छल पूर्वक गोपाल को पराजित करने में सफलता प्राप्त की थी। उस समय जीत का सेहरा चाहें खुसरू के सिर बँध गया; किंतु स्वयं खुसरू, अलाउद्दीन और उसके सभी दरबारी गोपाल नायक की संगीतज्ञता का लोहा मानने लगे। ऐसा कहा जाता है, अलाउद्दीन खिलजी ने उस विख्यात संगीत-शास्त्री को अत्यंत आदर पूर्वक अपने दरबार में रखा था। गोपाल नायक का देहावसान सं० १३७० के लगभग दिल्ली में होना अनुमानित होता है। गोपाल नायक के नाम से जो ध्रुपद उपलब्ध होते हैं, वे इस प्रथम गोपाल के नहीं हैं, बल्कि द्वितीय गोपाल के हैं।

द्वितीय गोपाल—का नाम गोपाल लाल था। वह उत्तर भारत का निवासी और ध्रुपद शैली का विख्यात गायक था। संगीत की सैद्धांतिक और क्रियात्मक समस्त विधियों का पूर्ण ज्ञाता होने से उसे 'नायक' पदवी प्राप्त थी; अत: वह भी गोपाल नायक कहलाता था। इस प्रकार प्रथम गोपाल नायक से इसका नाम-साम्य होने से काफी भ्रम पैदा हो गया है।

यहाँ पर संगीतज्ञों की सम्माननीय 'नायक' पदवी के विषय में भी कुछ लिखना आवश्यक है। मानसिंह तोमर से सम्राट अकबर के शासन-काल तक संगीत के विविध क्षेत्रों में उत्तर भारतीय संगीत की अपूर्व उन्नति हुई थी। उस समय संगीत-जीवी कलावंतों की कई श्रेणियाँ उनकी संगीत विषयक योग्यता के अनुसार बनाई गई थीं। वे श्रेणियाँ पंडित, गुणी, गायक, गंधर्व और नायक के नामों से प्रसिद्ध थीं। जो संगीतज्ञ संगीत के शास्त्रीय, सैद्धांतिक और व्यावहारिक सभी अंगों का पूर्ण ज्ञाता और व्याख्याता होता था, वह 'नायक' की सर्वोच्च उपाधि का अधिकारी माना जाता था। उससे कम योग्यता वाले संगीतज्ञों को अन्य श्रेणियों में स्थान मिलता था।

अकबरी दरबार का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ, जिसके विषय में अबुलफजल ने लिखा है कि उसके समान उत्तम गायक पिछले एक हजार वर्ष में नहीं हुआ, 'नायक' पदवी का अधिकारी नहीं माना गया था; क्यों वह व्यावहारिक गायक होते हुए भी संगीत के शास्त्रीय-सिद्धांत का पूर्ण ज्ञाता नहीं था। उसे आदर सूचक 'मियाँ' उपाधि ही प्राप्त थी, जिसके कारण वह 'मियाँ तानसेन' के नाम से प्रसिद्ध था।

बैजू और गोपाललाल दोनों ही अपने समय के गायक-शिरोमणि और विख्यात संगीत-शास्त्री थे। वे संगीत कला के सम्पूर्ण अंगों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक योग्यता रखने के कारण 'नायक' कहलाते थे। ऐसे कितने ही नायक समय-समय पर हुए हैं। उनमें से बैजू, गोपाल, बक्सू, महमूद, कर्ण, भगवान्, रामदास, तानसेन, धोंधी, हरिदास डागुर जैसे विख्यात नायकों का क्रमानुसार उल्लेख जगन्नाथ कविराय के एक ध्रुपद में इस प्रकार हुआ है—

राग कान्हरा, चौताल

सर्व कला संपूरन, मति अपार विस्तार,
नाद कौ नायक 'बैजू' 'गोपाल'।
ता पाछै 'बक्सू' बिहँसि बस कीन्हौं, 'महमू' महि मंडल में
उदोत चहुँचक भरौ, डिढ़ विद्या निधान,
सरस धरु 'करन' डिढ़ ताल ॥
'भगवंत' सुर भरन, 'रामदास' जसु पायौ,
'तानसेन' जगतगुरु कहायौ, 'धौंधी' बानी रसाल।
सुरति विलास 'हरिदास डागुर' जगन्नाथ कविराय,
तिनके पग परसिवे कौं स्याम राम रंग लाल[१] ॥

दक्षिण देशीय प्रथम गोपाल को 'गोपाल नायक' कहने का कदाचित अन्य कारण जान पड़ता है। उत्तर भारत के संगीतज्ञों की सर्वोच्च 'नायक' पदवी प्रथम गोपाल के समय में निश्चय ही दक्षिण में प्रचलित नहीं थी। वह अलाउद्दीन खिलजी के शासन-काल में उत्तर में प्रचलित थी, यह भी संभव ज्ञात नहीं होता है। यदि उस काल में नायक पदवी का प्रचलन हो गया होता, तो अमीर खुसरू अवश्य ही नायक कहलाता। प्रथम गोपाल के समय में दक्षिण देशीय सामंत अथवा छोटे जागीरदारों के मुखिया कदाचित नायक कहलाते थे। फकीरुल्ला ने प्रथम गोपाल के संबंध में लिखा हैं,—उसके १२०० शिष्य थे, जो कहारों की तरह उसके सिंहासन को उठा कर चलते थे[२]। इससे समझा जा सकता है कि प्रथम गोपाल संगीतजीवी गायक मात्र नहीं था, बल्कि प्रभुता सम्पन्न संगीतशास्त्री कोई सामंत था; जो अलाउद्दीन द्वारा दक्षिण-विजय के उपरांत अपनी वफादारी

[१] संगीत (हरिदास अंक) पृ० ३०

[२] मानसिंह और मानकुतूहल, पृ० ९५

प्रकट करने के लिए दिल्ली-दरबार में उपस्थित हुआ होगा। यदि वह संगीतजीवी गायक मात्र होता, तो उतना लाव-लश्कर रखना उसके लिए कदापि संभव न होता। इस प्रकार दोनों गोपालों की 'नायक' पदवियाँ विभिन्न अर्थों की द्योतक होती हुई भी भ्रमवश एक गोपाल से संबंधित मानी जाने से एक ही अर्थ में प्रयुक्त की जाती हैं।

श्री हरिहरनिवास द्विवेदी ने लिखा है—

"ईसवी चौदहवीं शताब्दी में मध्यकालीन संगीत एवं इसके पदों का रूप स्पष्ट दिखाई देने लगता है। दिल्ली में अमीर खुसरो और उससे टक्कर लेने वाला गोपाल नायक दोनों ही मध्य देश के संगीत के प्रकांड आचार्य थे। ...गोपाल नायक ने अनेक पद लिखे और उनके तथा अनेक अज्ञातनाम संगीतज्ञों के द्वारा भाषा का रूप निखरने लगा[1]।"

उन्होंने अपने मत के समर्थन में आगे भी लिखा है—

"मानसिंह तोमर के पूर्व गोपाल नायक के समय से ही हिंदी में—मध्य देश की हिंदी में गेय पद लिखे जाते थे[2]। ...जो पद-रचना गोपाल नायक के पहले प्रारंभ हो गई थी, मानसिंह तोमर के राज्य-काल में उसे बहुत अधिक विकसित होने का अवसर मिला[3]।"

उपर्युक्त उल्लेखों में भी दोनों गोपालों को एक मानने की भ्रमात्मक प्रवृत्ति का परिचय मिलता है। अमीर खुसरू से टक्कर लेने वाला प्रथम गोपाल दाक्षिणात्य संगीत शैली का

---

[1] मध्यदेशीय भाषा (ग्वालियरी) पृ० ७३

[2] वही, पृ० ७५

[3] वही, पृ० ७६

उद्भट आचार्य था। वह पद-रचयिता तो क्या, मध्यदेशीय हिंदी को भी कदाचित ही जानता था। द्वितीय गोपाल निश्चय ही मध्यदेश के संगीत का प्रकांड आचार्य और हिंदी पद-रचयिता था। जो पद-रचना मानसिंह तोमर के शासन-काल में अधिक विकसित हुई थी, वह संभव है प्रथम गोपाल से पहिले आरंभ हो गई हो; किंतु दक्षिण देशीय प्रथम गोपाल को हिंदी पदों का रचयिता मानना समीचीन ज्ञात नहीं होता है। हम लिख चुके हैं कि गोपाल नायक के नाम से जो ध्रुपद उपलब्ध होते हैं, वे द्वितीय गोपाल के रचे हुए हैं।

द्वितीय गोपाल अर्थात् गोपाललाल उत्तर भारत में कब और कहाँ पैदा हुआ, इसके विषय में निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है। ऐसा अनुमान होता है, वह ब्रज प्रदेश के आस-पास किसी स्थान में सं० १५५० के लगभग उत्पन्न हुआ था। उसके आरंभिक जीवन-वृत्तांत के संबंध में कई किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, किंतु उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। वृंदाबन के संत-संगीतज्ञ स्वामी हरिदास द्वारा उसे संगीत-शिक्षा प्राप्त होने की किंवदंती सत्य मालूम होती है। एक किंवदंती में बैजू को भी उसका संगीत-गुरु कहा जाता है; किंतु यह कथन प्रामाणिक ज्ञात नहीं होता है।

स्वामी हरिदास से संगीत-शिक्षा प्राप्त कर गोपाललाल युवावस्था में ही उद्भट संगीतशास्त्री और विख्यात गायक हो गया था। अपनी संगीत संबंधी विशिष्ट योग्यता के कारण उसे संगीतज्ञों की सर्वोच्च 'नायक' पदवी प्राप्त हुई थी। इससे वह 'गोपाल नायक' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके ध्रुपदों में सिकंदर शाह और राजा राम के जो उल्लेख मिलते हैं, उनसे सिद्ध होता है कि उसने किसी समय दिल्ली के सुलतान सिकंदर

लोदी और रीवा-नरेश राजा रामचंद्र से राज्याश्रय प्राप्त किया था। उसके एक ध्रुपद में सम्राट अकबर का भी नामोल्लेख मिलता है, किंतु वह प्रामाणिक ज्ञात नहीं होता है। इसलिए अकबर द्वारा उसे राज्याश्रय दिये जाने की बात भी अप्रामाणिक कही जा सकती है।

बैजू के अनेक ध्रुपदों में गोपाललाल का नाम और उससे संगीत-प्रतिद्वंदिता होने का उल्लेख मिलता है, जिसका समर्थन तानसेन के कतिपय ध्रुपद भी करते हैं। इससे सिद्ध होता है कि बैजू और गोपाल की संगीत-प्रतियोगिता अवश्य हुई थी। वह कब और कहाँ हुई, इसके विषय में निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता है। इससे संबंधित जो कई किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, उनकी सत्यता का प्रामाणिक आधार उपलब्ध नहीं है। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर की मृत्यु के पश्चात् किसी समय रीवाँ-नरेश रामचंद्र के आश्रय में बैजू के जाने की संभावना गत पृष्ठों में प्रकट की जा चुकी है। गोपाललाल के ध्रुपदों में राजा राम का उल्लेख होने से उसका भी रीवाँ-दरबार से संबंध सिद्ध होता है। इसलिए यह अनुमान होता है कि शायद रीवाँ-दरबार में रामचंद्र बघेला के समक्ष ही बैजू और गोपाल की सुप्रसिद्ध संगीत-प्रतियोगिता हुई हो। उसमें बैजू द्वारा गोपाल का पराजित किया जाना प्रसिद्ध है।

द्वितीय गोपाल का देहांत कब और कहाँ हुआ, इसके विषय में कोई निश्चित बात नहीं कही जा सकती है। एक किंवदंती के अनुसार बैजू से पराजित होने पर गोपाल का तत्काल देहांत होगया था; किंतु इसकी प्रामाणिकता का कोई विश्वसनीय आधार उपलब्ध नहीं है। संभव है, उसका देहांत सं० १६२० के आस-पास हुआ हो।

रचनाओं के संबंध में —

बैजू और गोपाल की रचनाओं के रूप में वे ध्रुपद हैं, जो उन्होंने अपने गायन के लिए रचे थे। वे ध्रुपद कलावंतों के पुराने घरानों में और संगीत के विविध ग्रंथों में सुरक्षित हैं। बैजू के ध्रुपदों की संख्या गोपाल की रचनाओं की अपेक्षा कहीं अधिक है। उन विख्यात कलावंतों की ये रचनाएँ अपने मूल रूप में ही उपलब्ध हैं, यह कहना तो ठीक न होगा। शताब्दियों के काल-प्रवाह और विषम परिस्थितियों ने निश्चय ही उन पर अपना प्रभाव डाला है, जिसके फल स्वरूप उनमें शाब्दिक परिवर्तन हो जाने की पूरी संभावना है।

इन रचनाओं के विषय वंदना, ज्ञान-भक्ति, संगीत-विवेचन, नायिकाभेद और कृष्ण-लीला से संबंधित हैं। इनमें बैजू की रचनाएँ संगीत के साथ ही साथ काव्य की दृष्टि से भी कुछ उल्लेखनीय हैं, जब कि गोपाल की रचनाओं में केवल संगीत का ही आग्रह है। बैजू की रचनाओं में वंदना के अंतर्गत गणेश, दुर्गा, शंकर, विष्णु, ब्रह्मा, सूर्य, राम, कृष्ण आदि अनेक देवी-देवताओं की स्तुति की गई है। ज्ञान-भक्ति की रचनाएँ ब्रह्म की व्यापकता, हरि-स्मरण, नाम-महिमा, चेतावनी आदि विषयों से संबंधित हैं। इनमें निर्गुण ब्रह्म का विशेष रूप से गुण-गान किया गया है। संगीत-विवेचन संबंधी रचनाओं में विविध रूपकों द्वारा नाद-विद्या का वर्णन किया गया है। इसके साथ ही गोपाल नायक को संबोधन करते हुए उसे संगीत-प्रतियोगिता की चुनौती देने वाले भी कई ध्रुपद हैं, जो बैजू और गोपाल की समकालीनता सिद्ध करते हैं। नायिकाभेद विषयक रचनाओं में विविध नायिकाओं की रसपूर्ण चेष्टाओं

का वर्णन है। कृष्ण-लीला संबंधी रचनाओं में नंदोत्सव, बाल-क्रीड़ा, अनुराग, वंशी-वादन और रास का काव्यात्मक कथन है। गोपाल की रचनाओं में संगीत-विवेचन विषयक ध्रुपदों की अधिकता है, जिनका काव्य-महत्त्व नगण्य है। इस प्रकार बैजू की रचनाएँ विषय और शब्दावली की दृष्टि से गोपाल की अपेक्षा तानसेन की रचनाओं से अधिक साम्य रखती हैं। वैसे भी संगीतज्ञों में बैजू और तानसेन की रचनाओं का जितना प्रचार है, उतना गोपाल की रचनाओं का नहीं है।

बैजू के ध्रुपदों में उसके किसी आश्रयदाता का स्पष्ट रूप से नामोल्लेख नहीं मिलता है, जब कि गोपाल की रचनाओं में सिकंदर शाह और राजा राम का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। बैजू के नायिकाभेद विषयक दो ध्रुपदों में 'मृगनैनी' विशेषण मिलता है, जो मानसिंह तोमर की कलाप्रिय रानी मृगनयनी का संकेत समझा जा सकता है। इससे बैजू के ग्वालियर दरबार से संबंधित होने की किंवदंती का समर्थन होता है।

बैजू और गोपाल की जितनी रचनाएँ अभी तक प्रकाश में आई हैं, उन्हीं के आधार पर उनका कुछ मूल्यांकन किया गया है। भविष्य में अधिक रचनाएँ उपलब्ध होने पर उनके संबंध में अधिक विस्तार से लिखा जा सकता है।

———

१. रचना-संग्रह

●

बैजू के ध्रुपद

१—वंदना

गणेश— [१] राग भैरव, चौताल

प्रथम नाम गनेस कौ लीजियै, जा सुमिरैं होय सिद्ध काम।
जय गिरिजानंदन जगबंदन लंबोदर,
तोहि जपत आवै रिद्धि-सिद्धि, होय सुख धाम ।।
अष्ट सिद्धि नव निधि पावै सुख बिश्राम।
कहै 'बैजू बावरौ' निसदिन सुमिरौ,
नाद विद्या प्राप्त होय लियैं नाम ।।

दुर्गा— [२]

तू आदि भवानी जग जानी सर्वानी, सर्ब कला दै विद्या बरदानी।
अंबे जगदंबे असुरसंहारनी तरनतारनी,
तान ताल सुद्ध राग रंग अक्षर दै बानी ।।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना उनचास कूट तान,
तिनके लच्छन मेरे जिय में आनी।
'बैजू बावरौ' रावरौ सेवक यह माँगै नाद विद्या मूर्तिमान,
राग मेरे गरे में समानी ।।

[३]

जै काली कल्यानी खप्परधारनी,
गिरिजा घनस्यामा चंडी चामुंडा छत्रधारिनी।
जग-जननी ज्वालामुखी आदि जोत,
अनंतादेवी अन्नपूर्ना आनंदी तरन-तारिनी॥
जोगिनी जै रक्षाकरनी विंध्यवासिनी,
ललिता बहुचरा भवानी असुरदलनी महिषासुर-मारिनी।
हिमगिरि हिंगलाज रानी काश्मीरी,
सारदा कामरू कमक्षा तुलजा 'बैजू' भक्त सुख-कारिनी॥

शंकर— [४] राग विहाग, चौताल

राजत चंद्रमा ललाट, सीस जटाजूट गंग,
गौरी अरधंग संग नंदी वाहन कोहै।
भसम आभूषन कियैं, गजचर्म ओढ़ैं,
मारतंड निरत करत है धरैं बहुरूप सोहै॥
व्याल हू विसाल, सोभित बदना सुख सदना,
कैलास विलासी सिव-सक्ति संजुक्त संसार जोहै।
जन 'बैजू बावरौ' रावरौ, नाथ पाये अगम-अनादि,
शंकर सराहिवे कूँ कोहै॥

[५] रागिनी परज, तिताला

जोगी जती सती संन्यासी अवधूत,
जोग आडंबर भावै तव भेष धरै।
जप तप तैं संजम जम कत दुख, हर-हर कहत सब दुःख हरै॥
मन सुमिरन ज्ञान ध्यान, चिंतन हर-हर करै।
कहै 'बैजू बावरे' रसना रटत नाम, जातैं पाप सब ही टरै॥

[६]

राग़िनी मुलतानी धनाश्री, ब्रह्मताल

चंद्र भाल सीस गंग गौरी अरधंग,
ललाट भस्म मुंडमाल कर पिनाक रैया।
महादेव महा जती उमारमन रैया,
त्रिलोचन नीलकंठ अंधक-रिपु रैया॥
शंकर शंभु त्रिपुरारि डमरू डिम डिम बजैया,
नाचत तांडव कैलासपति रीझत विष्णु रिझैया।
'बैजू नायक' संगीत निरतत देवपति रैया,
तिऐ ऐया ऐया ऐया आयो आयो ऐया॥

[७]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

बावरे के संग-साथ बावरी सी भई मैं,
बाप हू विवाह दीनीं बावरौ सौ जान कैं।
जानी हू न जात कौन गुरु कौन नाथ,
लीला धरि लीनौ भेष सर्प विष लिपटान कैं॥
त्रिसूल खप्पर हाथ, नैंनाँ जो अघात जात,
आडंबर बाघंबर सिंगी पूरि आन कैं।
'बैजू बावरे' पै कहा कीजै रोष, आपुने करम दोष,
जीवै मेरौ भोलानाथ, भलौ मैं जो लीनौ मान कैं॥

[८]

हरिहर—

बंसीधर पिनाकधर, गिरवरधर गंगाधर,
चंद्रमा लीलाधर हो हरिहर।
सुधाधर विषधर, धरनीधर शेषधर,
चक्रधर त्रिसूलधर नरहरि शिवशंकर॥

रमाधर उमाधर मुकुटधर जटाधर,
भस्मधर कुंकुमधर पीतांबरधर व्याघ्रांबरधर ।
नंदीधर गरुड़धर कैलासधर बैकुंठधर,
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गुनीजन,
निसदिन हरिहर ध्यान उर धर रे ।।

[९]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

जाकैं बैजंतीमाला, ताकैं सोहै मृगछाला,
जाकैं मुरलीअधर, डमरू ताके कर रे ।
जाकैं जटाजूट गंग त्रिसूल, ताकैं संख-चक्र-गदा-पद्म,
रुंड-मुंड माला जाकैं, पीतांबर पट रे ।।
वृषभ वाहन जाकैं गौरी अरधंग,
गरुड़गामी गोपीनाथ हरिहर रट रे ।
'बैजू' प्रभु हरिहर निसदिन ध्यान धर,
छोड़ दै जगत की सब खटपट रे ।।

विष्णु और श्रीकृष्ण— [१०]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

आजु रच्यौ करतार, दोऊ जग होय प्रगट्यौ,
उत श्री कमलापति, इत श्री नंदजी के नंदन ।
उत सुरन सुख करन, इत भक्तन दुख हरन,
निरगुन सरगुन दोऊ सरूप एक ही बंदन ।।
उत विष्णु बैकुंठनाथ, इत कृष्ण ब्रज के नाथ,
मोहिनी मोहे ईस, इत मोहिनी गोपी ईस,
गज द्रोपदी काटे कष्ट फंदन ।
उत गदा-पद्म-धर, इत मुरली-मुकुटधर,
'बैजू' प्रभु कौ ध्यान धरौ, जनम-मरन जाय सब द्वंदन ।।

ब्रह्मा— [११] राग भैरव सुर फाक्ता

प्रजापति द्विजपति आदिदेवपते जगत्पति ब्रह्मा ।
सावित्री चारु निगमपति, हंसवाहनपति ब्रह्मा ।।
षट दर्शनपति भृगुपति कहियत, चतुराननपति चतुरकर्मा ।
कर उक्ति-जुक्ति जाचकजन की, 'बैजू' नित उठ करै परिकर्मा ।।

सूर्य— [१२]

जागत भोरहि जोति स्वरूप किरन तें प्रगटचौ,
तिमिर घटचौ ससि भयौ मंद ।
दिनकर दिन लायौ सब के प्रफुलन कौं, बढ़ि-बढ़ि कियौ अनंद ।।
जग-चक्षु जोति-प्रकाश, प्रतच्छ देव जगबंद ।
'बैजू बावरें' रावरे कहावत, काटौ जनम-जनम के फंद ।।

सर्वदेव— [१३]

जै सरस्वती गंगा गनेस, ब्रह्मा विष्णु महेस,
शक्ति सूरज सर्व देव ध्यावै ।
सप्त स्वर तीन ग्राम, इकईस मूर्छना, उनचास कूट तान देही आवै ।।
उरप तिरप लाग डाट राग रागिनी पुत्र बधू सहित कंठ समावै ।
कहै 'बैजू बावरे' सर्व देव दया करौ,
राग रंग तान लय अक्षर गावै ।।

कृष्ण— [१४] राग भैरव, चौताल

जै माधव मुकंदमुरार मधुसूदन मदनमोहन, मनरंजन मनभावन ।
जगपति जगन्नाथ जगजीवन जगवंदन, जगपावन जग प्रगटावन ।।
कृष्ण केसव करुनानाथ कंसारि कंसकाल,
कालीनाग-नाथन काम-जरावन ।
बैकुंठनाथ बिहारी बद्री बामन विष्णुबल्लभ,
बाराह बिट्ठल 'बैजू बावरे' प्रान जियावन ।।

राम—

[१४] रागिनी आसावरी, चौताल

धायौ रे सज दल रामचंद्र विजै कर लंका नगर।
सप्त उदधि त्रिसित सेस कमठ कलमलाने,
महि डगमग उठत धूरि, गगन थकित छिपत दिनकर ॥
अरिन दल दरेर चढ़ौ महाबली ऐसौ सूरौ पूरौ,
अदंड-दंडन अखंड-खंडन नरवर।
'बैजू' प्रभु चले जीत कनकपुरी धर धर निसान,
नौवत बाजत आयौ है रघुवंस भूषनवर ॥

[१५]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

ए आज आयौ आयौ सूरजवंस छत्रपति राजा राम,
लंका नगर जीति, मन इंछा फल पायौ।
आनंद भयौ मेरैं आली, जीवन जनम सुफल भयौ चित चायौ ॥
कोऊ सुकृत मेरौ उदै प्रगट्यौ, पाये चारफल धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष,
निज चरन सरन दासन दास कहवायौ।
अनेक पतित उधारे रघुवर गीध व्याध गज गनिका,
गौतम-नारि खेचर भूचर निसिचर अजामिल बैकुंठ पठायौ ॥
जाकौं रटत सिव ब्रह्मादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार,
'बैजू बावरे' के प्रभु कौं नारद तुंबरू गुनी गंधरव हाहाहूहू गायौ ॥

गुरू—

[१७] रागिनी भैरवी, ताल रूपक

आदेस कर गुरू कौ, जो गुरुन के गुरू कौ, ब्रह्म गुरू कौ,
जासौं सप्त सुर तीन ग्राम आवै सुर भर कौ।
इकईस मूरछना उनचास कूट तान,
अस्थाई संचाई अलंकार 'बैजू' प्रभु के चरनधर कौ ॥

२—ज्ञान-भक्ति

ब्रह्म की व्यापकता— [१८]

प्रथम ओंकार टेरौं ब्रह्म चतुरानन,
जाकौं अक्षर सब रंग भरपूर रह्यौ, बानी तारन-तरन ।
अलख अपार आगम-निगम रहित, करत राग-रंग उर धार धरन।।
सगुन गुनरहित सरगुन निरगुन, सब जग अधारन ।
'बैजू' प्रभु आदि जोत निरंजन निराकार,
सूक्ष्म विराटरूप, घट-घट व्याप रह्यौ नारी-नरन ।।

[१६] रागिनी गुर्जरी, तिताला

आदि परब्रह्म देव नारायन, निरंजन निराकार सोई साकार ।
वाही तें त्रइलोक रचना, सत-रज-तम पंचभूत,
वाही तें अट्ठाइस तत्व जगत पसार ।।
वही आदि वही अंत, वही चराचर मधि भरपूर रह्यौ संसार ।
'बैजू' प्रभु करै सो होय करता-अकरता सकल,
कोटि-कोटि ब्रह्मांड एक एक रोम प्रति, ताहि भजौ बारबार।।

[२०]

ए ब्रह्म तेरे ही ज्ञान ध्यान सुमिरन रहत,
जप तप संजम भक्ति व्यौहार ।
तू ही तन तू ही मन, तू ही रोम में रम रह्यौ,
तू ही सब जग करतार ।।
तू ही आदि तू ही मध्य, तू ही अंत तू ही तंत,
तू ही साधु, तू ही सर्व व्यापि रह्यौ संसार ।
तू ही रज तू ही तम, तू ही भक्तन हित अनेक होत,
भर रह्यौ निरंजन निराकार 'बैजू' तू ही सार ।।

[२१]	राग भैरव, चौताल

अनंत ब्रह्मांड के नायक परब्रह्म श्री श्रीधर महाराज।
कृपासिंधु भक्तपाल सुखकरन कृपाल गरीब-निवाज ॥
यह विनती सुन लीजै, तेरौ अंत नहीं तू अनंत,
पूजूँ तोहि, बाँधूँ भुज कर, जाय दुख भाज।
'बैजू' प्रभु आदि अलख अगोचर निरंजन निराकार,
भक्त काज कोटि-कोटि रूप धरे, संतन-सिरताज ॥

[२२]	राग भैरव, चौताल

प्यारे तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णु, तू ही रुद्र तू ही सिव-सक्ति,
तू ही सूर्य तू ही गनेस।
जल-थल पवन-पानी तू ही, तेज तू ही आकास,
तू ही अग्नि तू ही जोति तू ही सुरेस ॥
तू ही ऊँच तू ही नीच, तू ही है सबहिन के बीच,
तू ही चंद तू ही दिनेस।
तू ही एक तू ही अनेक, गुरु-चेला तू ही अलेख,
'बैजू बावरौ' तोहि सुमरत तोहि तैं कटत कलेस ॥

[२३]	रागिनी भैरवी, चौताल

तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णु, तू ही गुरु तू ही चेला रे।
तू ही पवन तू ही पानी, तू ही रैन तू ही दिन,
तू ही बेली तू ही बेला रे ॥
तू ही सोना तू ही सुनार, तू ही दीपक तू ही मंदिर,
तू ही दरपन तू ही देखा रे।
कहै 'बैजू बावरे' सब का तू ही पोषन-प्रान,
तू ही बहुत तू ही अकेला रे[1] ॥

---

[1] इसी से मिलता हुआ तानसेन का भी एक ध्रुपद है। देखिये--
'संगीत सम्राट तानसेन', रचना-संग्रह सं० ५८

[२४] राग भैरव, चौताल

निरंजन निराकार परब्रह्म परमेश्वर,
एक ही अनेक होय व्याप्यौ विस्वंभर ।
अलखजोति अविनासी जोतिरूप जगतारन,
जगन्नाथ जगत-पति जग-जीवन जगधर ।।
वाही में सब जीव-जंतु सुर-नर-मुनि गुनी-ज्ञानी,
नाभि-कमल तैं ब्रह्मा प्रगटायौ और सतरूपा मन्वंतर ।
कहै 'बैजू' वही ब्रह्म वही विराट रूप,
वही आपु अवतार भये चौबीस बपुधर ।।

[२५] रागिनी भीमपलासी, चौताल

संसार तारन तू ही विधाता,
तिहुँ लोक पृथ्वी नमो नमो, संसार तारन ।
असुर संहारन रावन मारे लंका गढ़ जारन,
तू ही विधाता तिहुँ लोक पृथ्वी, नमो नमो संसार-तारन ।।
कुंभकर्न इंद्रजीत हिरन्य हिरनाक्ष रक्तबीज,
महिसासुर भस्मासुर मारन ।
दंतवक्र-सिसुपाल कंस-केसी अघा-बका,
'बैजू' प्रभु किये उधारन ।।

[२६]

रंग-रंग के अनेक रंग रँगे, विधना ताकौ वार न पार ।
पसु-पंछी सुर-नर-मुनि परमहंस,
भाँति-भाँति के भांड़े बनाये स्वेत-पीत-स्याम-रक्त हैं करतार।।
तू ही आदि अंत तू ही, तू ही सब में रमि रह्यौ,
तोही तैं सब जगत विस्तार ।
एक ही अनेक होय व्यापि रह्यौ घट-घट,
'बैजू' प्रभु निरंजन वही साकार ।।
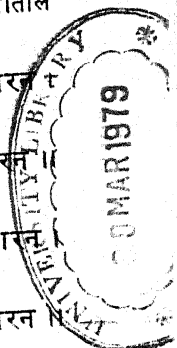
[२७]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

री जाकौं जोगी मुनिजन जपत, रिद्धि-सिद्धि ऋषि जपत,
गुनी गंधर्व नारद-सारद जपत अष्ट जाम री।
चंद्र-सूर्य जपत इंद्र-पवन पानी-अगिन बरुन सुर-नर-मुनि,
पसु-पतंग जपत कर परनाम री ॥
जती-सती सूर-बीर जपत असुर अखिल-विस्व,
विस्वंभर जाकौ नाम सबकौ विश्राम री।
ब्रह्मादिक-सनकादिक जपत सिव-पार्वतादि,
तू ही तू ही 'बैजू' जपत ब्रह्म कौ सुखधाम री ॥

हरि-स्मरण— [२८] राग भैरव, चौताल

प्रथम उठ प्रात ही हरी-हरि हरी-हरि, रट रे मन मेरे,
यातैं होवै सुफल अष्टयाम।
इहलोक-परलोक के स्वामी, बैकुंठ होवै विश्राम ॥
दीनदयाल कृपाल भक्त-वत्सल, भक्त-जनन अभिराम।
'बैजू बावरौ' रावरौ कहायकैं अब काहे कौं भटकत,
चौरासी-लक्ष धाम-धाम ॥

[२९] राग भैरव, चौताल

प्रथम नाम लीजियै प्रात ही हरी-हरि हरी-हरि हरी-हरि,
निस-दिन घरी-घरी पल-पल अष्टयाम।
यसोदानंद आनंदकंद, मधुसूदन बालमुकंद,
भक्त-वत्सल जन-विश्राम ॥
दामोदर दयालसिंधु भक्त-वत्सल भगवान,
बैकुंठपति वृंदाबन धाम।
बनबारी 'बैजू' प्रभु बद्रीनाथ विट्ठल विष्णु, बामन ब्रज विश्राम ॥

[३०]

हरि नाम बोल लै सुगना, तेरौ जनम सुफल सब होय।
एक दिन प्रान पींजरा तें जब उड़ि जायगौ,
तब कछु न बस चलि है, हरि के चरन चित पोय ॥
वृथा जनम जात है तेरौ, तन के पातक लै धोय।
'बैजू' प्रभु परम कृपालु दयालु हैं, पतित-पावन हैं सोय ॥

[३१] रागिनी मुलतानी, तिताला

हरि प्रेम रस छके छके, अजहू नाँ मन अघाये।
विरह बावरी रहत निसदिन, आनंद उर न समाये ॥
सोवत जागत विहरत हरि-हरि,या प्रतिछन चित लाये।
'बैजू बावरे' प्रभु कौं ध्यावत, और नहीं मन भाये ॥

[३२] रागिनी टोड़ी, चौताल

बरनन को कर सकत हरि के गुणानुवाद,
सेष सहस्र सुक पावत नहीं पार।
सनक सनंदन सनातन सनतकुमार,
ब्रह्मा सिव व्यास सारद नारद,
हाहाहूहू गंधर्व गावत नित-नित नाम-सार ॥
सुर-नर-मुनि सब रचि-पचि गये,
वाकौ मरम भेद कौऊ न जानत अपरंपार।
'बैजू बावरे' प्रभु भक्त-बच्छल हैं, सब जग के करतार ॥

नाम-महिमा— [३३] रागिनी टोड़ी, चौताल

नाम में रूप, नाम में विद्या, नाम में जप-तप संजम-रंजन।
नाम में ज्ञान-ध्यान, नाम में सुमिरन, नाम तिहारौ दुख-भंजन ॥
नाम ही तें जल पाषान तारे, नाम ही प्रहलाद दुख गये द्वंदन।
नाम ही अजामिल बैकुंठ सिधारे, 'बैजू' नाम पवित्र मंजन ॥

कृष्ण-नाम महिमा— [३४] रागिनी टोड़ी, तिताला

नित लीजियै नाम बनवारी स्याम हरि,
भक्त पूरनकाम कृष्ण विष्णु जगतारन।
जग-निस्तारन जन-प्रतिपालन, कंसासुर-मारन,
संत-उधारन भुव के भार उतारन॥
कच्छ मच्छ बाराह नरहरि बामन परसुराम,
राम हलधर नारायन बुध कल्की नाना विधि बपु धारन।
'बैजू' के प्रभु एक तें अनेक होय बहुरूप बहु भेष धरे,
अपुने सेवक के जनम-मरन निवारन॥

[३५] रागिनी टोड़ी, चौताल

मेरें तौ कृष्ण नाम अधार जिन रच्चौ जग पसार,
लोभ तृष्ना काम क्रोध तजौ जंजार।
जिन रच्चौ आदि अंत भुव आकास त्रैलौक,
निरंजन साकार निश्चय कर जपौ श्रीहरि मुरार॥
जुग-जुग भक्त हेत अवतार लेत हैं, भक्तन प्रान-अधार।
'बैजू बावरे' प्रभु की चरन-सरन गहियै, मानुस-जनम नहीं बारबार॥

[३६]

एहो ज्ञान रंगे ध्यान रंगे मन रंगे सब अंगन रंगे।
प्रथम राम-कृष्ण रंगे, रहीम-करीम रंगे, घट-घट ब्रह्म रंगे,
रोम-रोम मन रंगे, हरि संग रंग रंगे॥
जप रंगे तप रंगे, तीरथ ब्रत नैंम रंगे, सर्वमयी अंग-अंग रंगे।
जीव-जंतु पन्नग पसु एक ईश्वर रंग रंगे,
सुर-नर-मुनि संग रंगे, 'बैजू' प्रभु कृष्ण रंग रंगे॥

चेतावनी— [३७] रागिनी मुलतानी, तिताला

समझ सोच लै मूरख निदान रे,
जग में दोय दिन के हैं तेरे अभिमान रे।
आदि अंत वोही सब कौ प्रान रे,
कर ध्यान रे, हरि उर अंतर घट-घट में समान रे॥
जल-थल भूमि-अकास रे, सब ठौर जाकौ प्रकास रे।
जाकी धारौ नित आस रे, सोई है बैकुंठ-निवास रे॥
और विकार दुविधा तज रे, 'बैजू' हरि चरनन भज रे।
प्रभु क्यों न होत पद-रज रे, गोपाल भजन तज लज रे॥

[३८] रागिनी टोड़ी, चौताल

काहे कूँ भटकत फिरत रे मन, जपौ हरि-नाम जासौं काम।
तीरथ व्रत नेंम धर्म, षट कर्म तजि भये एक नाम॥
कलिकाल और नाँहीं एक रह्यौ हरि व्यौहार,
वही जप वही तप वही है धाम।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गुनीजन,
साँचौ संसार मधि एक ही है राम॥

[३९] रागिनी टोड़ी देसी, चौताल

तृष्णा कौं तजि देहु क्षमा कौ भजन करौ,
मद कौं जीत लेहु, नित दया हिय में धारि,
पाप सौं राखौ दूर चित, सत्य बचन मुख बोल,
साधु पदवी जिय धारौ।
सत्पुरुषन कौं सेवन करौ, नम्रता अति विस्तारौ,
सर्व गुन सौं आप गुप्त विद्वज्जनन की सेवा करौ,
यामैं होवै निस्तारौ॥
मान-अपमान त्यागौ, काम-क्रोध दुर्जन तें भागौ,
ज्ञान-ध्यान अनुरागौ, हरि नाम उचारौ।

कोमल बचन मुख भाखौ, एक ब्रह्म सब जग राखौ,
'बैजू' प्रभु कौं घरी-पल-छिन निस-दिन रटना रटौ,
तातैं होय जग उधारौ ॥

वस्तु-श्रेष्ठता— [४०] रागिनी टोड़ी, सुर फाक्ता

पंछिन मनि गरुड़, गज मनि एरावत, दिन मनि दिवाकर।
गीत मनि संगीत, बन मनि वृंदाबन, तरु मनि कल्पतर ॥
नर मनि नारायन, तारा मनि ध्रुव,
तीर्थ मनि गंगा, देव मनि संकर।
नारी मनि उरवसी, पुष्प मनि कमल,
दास 'बैजू' मनि मुख मुरलीधर ॥

३—प्रशस्ति

राज-प्रशंसा— [४१] रागिनी बहादुरी टोड़ी

दीनौं करतार तुम्हें राज-साज की सकल सोभा,
ऐसी नाँहि और कोऊ जानी।
साहब सुजान समझ तान की राखत हौ तुम,
गुनी आय गावत हैं नीकी सुद्ध बानी ॥
जानत हैं नीके भाग आपने 'बैजू',
रहत हैं रीझि जगत में तुम्हारी अमीर राव-रानी।
देत हौ दान-सनमान, दुख-दारिद्र बिड़ारन,
हमरे कारन कियौ तुम हू कौं अब साहब फिरा निसानी ॥

दशहरा की बधाई— [४२] राग हमीर, चौताल

दसहरा मुबारिक होय तुमकौं, संतति-संपति सहित समझाऊँ।
गीत गाय-गाय आनंद बधाये, राजा राम रहस-रहस कर गाऊँ ॥
लंका जीति राम घर आये, सीता मिलन सुखी सोहिलौ सुनाऊँ।
'बैजू' के प्रभु घर-घर आज बधायौ, भक्ति-दान वर पाऊँ ॥

४—नाद विद्या

नाद-ब्रह्म— [४३]

नाद ब्रह्म कौ अगाध व्यौरौ जानत,
गुनीजन बखानत याकौ कोऊ न पार पाइया ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना,
उरप-तिरप लाग-डाट राग छत्तीसौ तियाइया आइ आइया ।।
आरोही-अवरोही बाइस सुरति,
उनचास कूट तान कौं विधि गाइया ।
कहै 'नायक बैजू' मृदंग भेद तालाध्याय,
संगीत मत कहे तियाइया ऐ ऐया ।।

नाद-परमेश्वर— [४४] रागिनी परज, चौताल

प्रथम आदि सिव-सक्ति नाद-परमेसुर,
नारद तुंबरू सरस्वती फनपति रे ।
अनाहत आदि नाद गुन-सागर स्वरूप,
ब्रह्मा-विष्नु-महेस लछमन रे ।।
आदि धारिनी शेष आदि, चंद्र-सूर्य आदि,
पवन-पानी आदि अनगन रे ।
'बैजू' के प्रभु कवि गुरु प्रसाद, सुध-बुध मत गुन गन रे ।।

नाद-साधन— [४५]

पंच दस साधौ गुनी चतुर्दस दरिया,
द्वादस बीन घन विचित्र, पिंग के गरजें सप्ताध्याय तिरिया ।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकईस मूर्छना, बाइस सुरति सुरिया ।।
उरप-तिरप लाग-डाट, आहत अनाघात घिरिया ।
आतक-खातक स्वरांतक, औडव-खाडव संपूरन 'बैजू' किरिया ।।

नाद-विद्या अपार— [४६] रागिनी अलैया, चौताल

कहा तुम गावत हौ गायन, नाद विद्या अपरम्पार।
गीत प्रबंध धारू धुरपद कौ कहौ कौन प्रमान,
केते गुनी गये रचि-पचि हार ॥
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना बाईस सुरति,
उनचास कूट तान की कसौटी कलान की सम्हार।
कहत 'बैजू बावरा' ताकी ढुरन-मुरन,
आरोही-अवरोही अलाप अस्थाई-संचाई प्रथम ओंकार ॥

नाद-दरियाब— [४७]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

ए जू नाद-दरियाब तापै तन-जहाज कीने,
उमड़ि फिर लागे री चौंप ढरन।
सुर के बरदवान कीन्हे अचरा के बैंन,
तापै गुनी लागे तान तरन ॥
गीत संगीत जुगल बंध त्रेवट, ताके लागे भार भरन।
कहत अधीन प्रवीन सागर समुद्र उतरे पार,
'बैजू' लागे चरन ॥

नाद-राज्य— [४८]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

तान गजराज ज्ञान कीनौ महावत,
त्रैवट घंटा बाँध ताल अंकुस भर।
खरज पाखंड री तीन ग्राम सकल आधार,
ढुरन-मुरन रन सौं जीत, मारत सब एक-एक पर ॥
गीत-नाद की असवारी धुरपद परवंध,
तुपक त्रेवट तिलाना चतुरंग प्यारे सोहत भूपर।
कहै 'बैजू नायक' उकति जुगत की बुधि बजीर,
मन राजा राज करत हरि कौ ध्यान धर ॥

[४६]

नाद-दीपक—

नाद पार किन हू न पायौ, रच-पच नर जनम गँवायौ ।
गगन बंद पवन मंद सप्त सुरन छायौ, पट रे दीपक-राग गायौ ।।
काहे कौ दीवला काहे की बाती, रूपे कौ दीवला सोने की बाती,
इकईस मूर्छना जोति दिखायौ ।

आरोही-अवरोही बाइस सुरति प्रकास,
'नायक बैजू' दीपक राग गायौ ।।

[५०] रागिनी टोड़ी, चौताल

नाद-भेद—

अनुद्रुत-द्रुत विराम लघु-लघु विराम,
गुरू पुलित ताल लय अतीत अनाघात प्रमान ।
खरज रिषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषाद तान ।।
कहै 'बैजू बावरे' टोड़ी गावत गुनीजन, सुर राग ताल जान ।
निषाद धैवत पंचम मध्यम-मध्यम, गांधार रिषभ खरज गान ।।

[५१] राग भैरव, चौताल

राग-रूपक

प्रथम भैरव नीके बस प्यारे भये,
रवि के उदै आये रामकरियाँ खात ।
बिवस भये देखियत गात, उदै सकार कौन तिय,
ललित बचन बोलत हौ तुतरात ।।

बेला बेर बीत गई, अली आस पूज गई,
देव गरीब निवाज काकौ भौ संगम षटपट भई रात ।
देसाख सुघर तिय सूहा वस्त्र पहिर खड़ी, सुघराई जानि परात ।।
हम आसावाढ़ी सारी रैंन तुम देवगंधार गावत,
गूजरी सुन बीती परभात ।

तोड़ी हम सौं प्रीति, जौनपुर बसत हैं नवल पिय,
देसीख ऊनेजाय, लाचार हो बहादुरी डरात ।।
जंगल-जंगल ढूँढ़त हारी, झिझावट जिन करौ,
मेरे प्यारे आसा जोवत विहात ।

सारंग नैंनी पास जावौ, मधु-माधवी बड़हंसनी,
सावन प्यारे वृंदाबन मधि इहाँ लंक दहात ॥
धन-धन श्री मूल तन मंत्र पढ़ि डारौ सब मैं,
पल-छिन निरखत तुमकौं पूरिया बड़ भाग गात।
जैतश्री बाकौं, पूरवै पूरौ पुन्य फल जाकौ, पूरिया लखात ॥
मरवानैं दई है काम की श्री महाराज, गौरी गौरा टंकरात।
ए मन होत कल्यान कौं चाहत भूपाल बड़े,
हमीर पूरौ रात कामोदि पत कर छाया पग डगमगात ॥
ऐंड़ात जमुँहात बहुनायक हौ जू कान्हर,
बाग केसरी कंठमाल कौस्तुभमनि सहना बोल सुहात।
वाके दरबार में गये बहार करन हिंडोरे पाँच में,
बसंत हौं भवर नाम कहात ॥
विहागत भई मेरी खंवायकर ठाड़ी रहत,
मरज्यौं दुख बीती मारू कासौं कहौं बात।
सोरठ नाँ लागी स्याम मेरी जैं जैं बतियाँ,
करार कर गये सोहनी मोहनी कर घात ॥
मोहि अहीरी जान गोकुल की ग्वारिनी,
एराकी चाल चलत, चलक छंद कहि जात।
कपोल कहाँ पीक लागी जानी है जू जानी,
दीपक चंद्र प्रकास भये नीलांबर ओढ़ि आये,
कालि गये अबध दै रात ॥
मेघन स्याम मलार नटवर न रहे वाँहीं के गौड़ें पग धरात।
बाँके श्री बिहारी लहर लोम पहाड़ पै कंकन गढ़ात,
खंडिता नायिका की बात ॥
'बैजू बावरी' रावरी हितू, तिहारौ राग सागर गावत,
तीन तिलक सिर माँझ दिखात ॥

नूतन-विद्याएँ— [५२] रागिनी टोड़ी, तिताला

ऐसे बहुत चले नये-नये हुनर, तिन छिन सीखत रहत ही विद्याधर।
'बैजू' कहै बात जिय नाहीं समझत, को धनवंत भयौ धरनि पर ।।

गुणियों की संगत— [५३] रागिनी टोड़ी, सुर फाक्ता

ताल सुर के भेद, गुनीजन की संगति रहै तौ कछु पावै।
सीखत सुनत रहै सदाँ ही, ढुरन-मुरन मुद्रा प्रमान सो आवै ।।
आपुही गावै आपुही बजावै, तान गीत के ब्यौरे समझावै।
'बैजू' के प्रभु रस बस कर लीने, तब ही रीझ रिझावै ।।

गोपाल को संबोधन— [५४] राग भैरव, झपताल

प्रथम नाद मूल तैं उचरै,
ताल-बंधान सौं गावै, जो आवै सो सम परै।
सप्त स्वर तीन ग्राम इकईस मूर्छना,
बाइस सुरति उनचास कूट तान भरै ।।
उरप-तिरप लाग-डाट अंसन्यास ग्रह,
आतक-खातक स्वरांतक औडव-खाडव उच्चरै।
कहै 'बैजू बावरे' सुनो हो गोपाललाल,
यह विद्या अपरंपार गुन चरचा सौं लरै ।।

[५५]

तीन भिखारी, भानुजा की धूप भिखारिन,
चंद्रमा जो चेरौ जाकी चाँदनी जो चेरी।
रुकमिनी जो चेरी जाकी राधिका भी चेरी,
जनकसुता आधीन भई तेरी ।।
इंद्रपरी पग धो-धो पीवै, बिजरी से ऊजरी कनौड़ी भई रहै री।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाललाल,
ऐसी त्रिया कौन सी, जो विधना सँवारी ।।

[५६]

राग़िनी भीमपलासी, ताल धमार

मन में जोति प्रकास बार लै दियरा रे सारंग ।
अनाहत आदि नाद वेदांग गुनकार संगीत साधंग ॥
आदि नाम सह्यार रे सतसंगत सौं, नारद तुंबरू सरस्वती साधंग ।
भनत 'बैजू बावरे' सुनियै गोपाललाल, सब गुनियन में असाधंग ॥

[५७]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

हित करै तासौं नाँ करि रार, गरब न कीजो रे गुनी ।
गर्व कियैं कछु हाथ न आवै, भरम गमावत क्यों आपुनी ॥
गीत छंद धारू धोवा माठा, प्रबंध चरचा घनी ।
कहै 'बैजू नायक' सुनियै गोपाललाल,
रचि पचि गये मुरारि मुनी ॥

गोपाल से प्रतियोगिता— [५८] रागिनी टोड़ी, झपताल

तेरे मन में केतौ गुन रे, जेतौ होय तेतौ प्रकास कर रे ।
कहूँ तोसैं बार-बार मूरख मन रे, जोई सुर आवै सोई रर रे ॥
गांधार कौ धैवत पंचम कौ रिषम षरज कौ भर रे ।
कहै 'बैजू बावरे' सुनो हो गोपाललाल,
नाद-विद्या अथाह काहू सौं न अर रे ॥

[५९] रागिनी टोड़ी, सुर फाक्ता

तेरे मन में केतौ गुन रे, जेतौ होय तेतौ प्रकास कर रे ।
हम जाने तुम सूरे पूरे, जोई सुर आवै सोई भर रे ॥
पाहन पिघलावै, हिरन बुलावै, ज्यौं बरसै मेह सरसुती बर रे ।
कहै 'बैजू बावरे' सुनो हो गोपाललाल,
अर हू न कर रे, धाय गुनियन के पाँयन पर रे ॥

[६०]

राग़िनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

नाद ब्रह्म अपरंपार, किनहू न पायौ पार, सीखत पंडित कहायौ।
गीत संगीत गुनीजन मरजी, पाहन तौ न गलायौ॥
सात सप्तक गुप्त, प्रगट तीन सप्तक गोपाल गायौ।
ब्रह्मा वेद उचरायौ, सारंग बौरायौ मोतिन माल पहिरायौ॥
गरब धरि पार चलौ बार उलट ठहरायौ,
देस-देस के गुनी, सकल सृष्टि महामुनी, ते हू रच-पच गये,
भेद नहीं पायौ।

तब ही 'बैजू' आयौ, पाहन पिघलायौ, जिनते पायौ,
तिनहि लुकायौ, मृग बौलायौ, गरे कौ हार गोपाल ही दिवायौ॥

[६१]

जोवन गर्व सखि जिन कीजै, रह्यौ न काहू पै, और न रहैगौ।
रावन कुंभकर्न हिरनाकुस बड़े बड़े छत्रपति लौं सूर ढहैगौ॥
मधुर रसना तैं पिय संग बोल लै, आगैं पाछैं कोई न कहैगौ।
'बैजू' के साधे सप्त स्वर बाजे, पिघले पाथर माँझ ताल गढ़ैगौ॥

खेम की होरी

[६२]

विद्या तेरी रे नायक गोपाल।
गुनी औ मुनी ते हू जपत नाद वेद, ब्रह्मा उच्चार करत,
'नायक बैजू' पिघलाये पाथर, उँमगाये ताल॥

[६३]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

विद्या सोई भली, जासैं पाइयत है री (नंद) लाल।
कुंज-भवन में आय बैठे, रीझि दई मृगछाल (बनमाल ?)॥
गुपत सप्त, प्रगट छत्तीस, डाँडी बाँध आयौ गोपाल।
'बैजू' के गाये तैं सप्त सुर भूल गये, पिघले पाषान, बूड़े ताल॥

[६४] रागिनी मुलतानी, चौताल

काहे कौं गर्व कीनौ गुनी जो कहायौ है,
गीत छंद धारू ध्रुरपद नीके गा सुनायौ है।
गीत संगीत जुगल बंद माठा बातौं करत, यौं ही जनम गँवायौ है।।
किते नाद किते वेद किते सुर किते ताल,
इनहू को भेद कितहू नाँ पायौ है।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाल नायक, झगरत जनम गँवायौ है।।

[६५] राग भैरव, झपताल

प्रथम नाद मूल तैं उचरैं, ताल बंधान सौं गावै।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना,
बाईस सुरति उनचास कूट तान लावै।।
अंस ग्रह न्यास विकृत द्वादस भेद सो,
भरत संगीत हनुमत जतावै।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाल नायक,
ऐसी विद्या सौं को लड़ै, पाहन पिघलावै।।

[६६]
रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

नाद समुद्र पार नहीं पायौ सीखत पंडित कहायौ,
धारू ध्रुरपद धोवा माठा जुगन लौं गायौ।
प्रथम नाद वेद भयौ ब्रह्मा वेद उचरायौ,
सारद नारद तुंबरू गंधर्व हाहाहूहू गायौ।।
ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र चाह्यौ, हनुमान मत भरत भायौ,
सुर-नर-मुनि रच पचायौ, सिव-सनकादि गायौ।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो गोपाललाल,
सारंग बौरायौ, पत्थर मधि डूबे ताल, पाहन पिघलायौ।।

[६७] रागिनी पूर्वी, चौताला ध्रुपद

राग रंग सुद्ध मुद्रा सुद्ध अक्षर सुद्ध छंद पैयत हैं,
साँचे गुरून सौं पावै लेख ।
सुर भेद ताल भेद विचार कैं साधै स्वराध्याय तालाध्याय,
वाद्य नृत्य प्रकीर्न संगीत सास्त्र कौं देख ।।
धारू धुरपद प्रबंध छंद गीत धोबा माठा चतुरंग,
त्रेवट तिलाना देस विदेस सु भाषा संस्कृत विसेष ।
कहै 'बैजू बावरे' सुनो हो गोपाल नायक,
हिरन बुलाये, पाहन पिघलायैं, तेरी लाख मेरी एक ।।

५——नायिकाभेद

[६८]

स्वकीया—

सुंदर अति नवीन प्रवीन महा चतुर,
मृगनैनी मनहरनी चंपकबरनी नार ।
केहरि कटि, कदली जंघ, नाभि सरोज, श्रीफल उरोज,
चंद्रबदनी, सुकनासिका, भौंहधनुष, काम ढार ।।
अंग-अंग सुगंध पद्मिनी, भँवर गुंजत सुवास
आवत क्रोध नहीं, सांत सरूप,
कृसता ही दबी जात बारन के भार ।
धन-धन ताकौ भाग, तो सी तिया जा घर,
'बैजू' प्रभु रस बस कर लीने, काम-जौल डार ।।

[६९] रागिनी जैतश्री, चौताल

खंडिता—

मेरैं नहीं आये हौ नंदलला, जाओ क्यों न तिनके गृह,
जिनके रस बस भये, रहे सुख वाँहीं रैंन जागे ।
धन-धन भाग सुहागिन, सरस सुंदर तिया रंग,
अंग अभूषन रंग देखि, ब्रज-भूप प्रेम पागे ।।

तुम हौ गोपाल जू ग्वाल जाति अहीर बेपीर,
पर नारिन सौं हित चित करि, तुम्हरे नैंना लागे।
'बैजू' प्रभु निडर ढीठ, लंगर डगर-डगर घर-घर फिरत,
छैल लागे जाबक-चिह्न, रस चाखे मदन तैं,
सुख-सदन देखौ बदन ढीले परे बागे ॥

मानिनी— [७०]

तोसौं लागि रहे पिय सुंदरी, मान चल-चल उठि नारी।
मान-गुमान करति, जोबन कौ गर्व तोहि,
वहीं आ वहीं चल तू, आभूषन सँवारी ॥
तोरी न मानी बात, वे तौ कहूँ जात, जानत हौ लच्छन सब,
उन परनारिन सौं परम सुख पायहु, कठिन होत दूती गँवारी।
इत गुरुजन की लाज, वे आतुर ब्रजराज,
'बैजू' के प्रभु सौं मिलौगी तब ही, सब सौतिन के मन मारी ॥

[७१]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

बोलियो न डोलियो, लै आऊँ हूँ प्यारी कौं,
सुनौ हो सुघरबर, अब ही मैं जाऊँ हूँ।
मानिनी मनाय कै, तिहारे पास लाय कै,
मधुर बुलाय कैं, तौ चरन गहाऊँ हूँ ॥
सुन री सुंदर नारि, काहै करत एती रारि,
मदन डारत मारि, चलि तपत बुझाऊँ हूँ।
मेरी सीख मानकर मान न करौ तुम ऐस,
'बैजू' प्रभु प्यार सौं बहियाँ गहाऊँ हूँ ॥

विरहिनी— [७२] रागिनी मल्हार ध्रुपद,चौताला

इंद्र हू की असवारी, पपैया नकीब कीनौं, देस-देस खबर सारी।
गरज दमामा मारू, धुरवा निसान बान,
बादरन की फौजै छाई बूंदन की तीरा कारी ॥

दामिनी की रंजक, तामैं ओले गोले तोप छुटत,
कहा करै विरहिन बेचारी।
कहै 'बैजू बावरे' सुनौ हो तुम चतुर नारि,
जिनके पिया विदेस, उनकौं यह जंग भारी ॥

[७३]
रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

कहा कहूँ उन बिन मन जरौ जात है,
अंग बरत करमन कियौ है बिगार।
यह मूरत सूरत बिन देखैं, भावै न मोहि घर-द्वार ॥
इत-उत देखत कछु नाँ सुहावत, बिरथा लगत संसार।
बैर करत हैं दुरजन सब, 'बैजू' न भावै मन,
पिय के अचरज भयौ है व्यौहार ॥

स्वप्न-मिलन— [७४] रागिनी भैरवी, चौताल

आज सुपने में साँवरी सलौनी सूरत देखी,
सैंनन करी मोसौं बात।
तबतैं मैं बहुत सुख पायौ, जागत भई परभात ॥
मधुर बचन बोल मदन मंत्र पढ़ि डारौ,
उन बिन छिन-छिन कछु न सुहात।
'बैजू' ब्रज की नारी, जंत्र-मंत्र लिख सारी,
कल न परत गात, सब दिन-रात ॥

[७५]
रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

ए आयौ-आयौ मेरे गृह नंद कौ नंदन, मन इच्छा फल पायौ।
कहा कहौं मेरे भाग की महिमा,
अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष चारौं पदारथ पायौ ॥
अनेक पतित उधारे गिरिधर, भक्तन के मन भायौ।
'बैजू बावरे' रावरे कहावत, चरन-कमल चित चायौ ॥

आगमपतिका— [७६]

कर पै गुलफ धरैं तिय दुचित अनमनी,
करकैं सिंगार बिरहिन ह्वै बैठी री।
पिय-पिय रट लागी, मग जोहत मोहत रंग,
उमंग भरी आलस अंग-अंग मरोरत है ऐंठी री।
नख-सिख लौं आभूषन भूषन जगमग रहे,
पिय आवन की उछाह, नाँहिन पल कल नैंक लेटी री ॥
'बैजू' प्रभु मनमानी आय गये वाही छिन,
धन-धन भाग सुहाग नारि अंग-अंग भैंटी री ॥

रति-विलास— [७७]

सुंदर मृगनैंनी कामिनि, रति मानत पति संग।
भुज पर सीस, कपोल दसन मधि, कुच पर कंचुकी तंग ॥
जाँघन पर जाँघ, मुख तँबोल, अधरन पर टपकत रंग।
यहि भाँतिन के सुख दै सुख लै, रंग बाल 'बैजू' केलि अंग ॥

६—कृष्ण-लीला

जन्मोत्सव— [७८] रागिनी जैतश्री, चौताल

सुफल जनम भयौ री आनंद गोकुलचंद,
बरनत ग्वाल बंस उजियारौ।
नीके दिन नीकी घरी महूरत सुभ योग,
प्रगटौ बड़े भाग नंद कौ दुलारौ ॥
एक नाँचत एक मंगल गावत,
एक मृदंग एक घन सिखर उचारौ।
एक हरद दूध अक्षत रोरी लै छिरकत,
'बैजू' करत कोलाहल भारौ ॥

[७९] रागिनी जैतश्री, चौताल

एरी अब आनंद भयौ री ब्रज में, श्रीकृष्ण जनम लियौ आज ।
सुभ घरी सुभ दिन सुभ ही महूरत, प्रगट भये ब्रजराज ।।
ब्रह्मा वेद पढ़त, महादेव दरसन आये,
नाँचत गोपी ग्वार, नारद बीन बजाये स्वर साज ।
'बैजू' नंद-महोच्छव देख मगन भये,
पूजे मन इच्छा, सुर-नर-मुनि काज ।।

[८०] रागिनी जैतश्री, चौताल

आँगन भीर भई ब्रजपति के आज, नंद-महोत्सव आनंद भयौ ।
हरद दूब दधि अक्षत रोरी लै छिरकत परस्पर,
गावत मंगलचार नयौ ।।
ब्रह्मा-ईस-नारद, सुर-नर-मुनि हरषित,
विमान पुष्प बरस रंग ठयौ ।
धन-धन 'बैजू' संतन हित प्रगटे, नंद-जसोदाए सुख जो दयौ ।।

[८१]

अचल राज करौ, कोटि बरस लौं चिरंजीव रहौ,
जसुमत तेरौ लाल, दरस देख भये निहाल, मैं जोगी सुख पायौ,
मेरे जिय आनंद भयौ, उर नाँ समात है ।
जौलौं ध्रुव धरनि तारौ, जीवै तेरौ राजदुलारौ,
जौलौं रवि-ससि सुमेरु-गगन पवन-पानी,
लोमस की सी आयुर्बल होय, यह असीस दै जात है ।।
डिम-डिम डमरू बजायैं, सिंगी-नाद कर मुख से गायैं,
महादेव जू दरसन पायैं, अलख छवि निरख,
मंद-मंद मुसकात है ।
पाँच बार फेरी कर, कछुक स्रवन लागि मंत्र धर,
'बैजू' नाथ कैलास के बासी प्रेम-मगन नाँचैं,
तांडव-लास्य तकधुंग-तकधुंगा, निरतत अपुने मन सुख पात है।।

प्रभात-जगावन—　　[८२]　　राग भैरव, चौताल

मोहन जागौ मनोहर मधुसूदन मदनमोहन,
　　मुरारी माधौ मुकुंद मनभावन ॥
जागौ जागौ जानराय जगतपति जगजीवन,
　　जादौनाथ जसोदानंद जगत सुख प्रेम बढ़ावन ।
जागौ ए जू कान्ह कुँवर केवल कल्यानराय,
　　जागौ ए श्रीकृष्न चंद्र प्रेमानंद पावन ॥
जगत के जगैया तुम प्रभु 'बैजू' के स्वामी,
　　बलराम कृष्न जू के भैया पाप नसावन ॥

प्रेमासक्ति—　　[८३]

राग़िनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

जहाँ लगि लगन लगी लालन सौं, तहाँ लगि चित ललचाऊँ ।
कौन मंत्र मोहन पढ़ि डारौ, अपुने मोहन बस कर पाऊँ ॥
हा-हा करौं हरि कौं कैसै देखौं, साँवरी सूरत हृदै लाऊँ ।
'बैजू बावरे' रावरी कृपा तैं, तन-मन-धन बारि बलि जाऊँ ॥

[८४]　　राग भैरव, चौताल

आज लखी सखि मनमोहिनी मूरत माधुरी,
　　सुंदर चतुर सुजान कान्ह ।
सीस मुकट स्रवन कुंडल, घुंघरारी अलक झलक,
　　चलत चाल ठुनक-ठुनक, अधरन मुरली बजाई तान ॥
भूली सुध-बुध सब, गृह-काज डारि दियौ,
　　बिसरि गयौ खान-पान, लखि मनमोहन चतुर सुजान ।
'बैजू बावरी' रावरी कर डारी, मोहि न सुहात आन,
　　त्यागि दई कुल-कान ॥

[८५]

राग़िनी मालवी ध्रुपद, चौताल

नयनन कौं नहीं परत है कल, कमलनयन बिन देखैं,
जादवराज ब्रजराज ।
कालिंदी के तीर भई भीर, बलवीर वासुदेव बनवारी के कारन,
तजि दई लोक-लाज ।।
व्याकुल मलीन बदन कीन सुधि न रही हरि बुधि हर लीनी,
कीनी बावरी सी सरौ न एकौ काज ।
काहे कौं देर करी हरि मेरी बेर, 'बैजू' कौं बेगि मिलौ,
प्रभु मनमोहन माधौ सुख-निधान सिरताज ।।

[८६]

हिंडोल, चौताल

प्रानधन मधुसूदन बनवारी, प्रेमानंद जगबंदन ।
साँचे सुरन जग में गावै, मुरली धरैं अधर आप सुखकरन ।।
जगतपति जगजीवन, मदनमोहन मुकुंद मन-भावन ।
जय माधव विष्णु बल्लभ बैकुंठ बिहारी,
'बैजू' के प्रान जियावन ।।

बंशी-वादन—

[८७]

राग भैरव, चौताल

मुरली बजाय रिझाय लई मुख मोहन तैं,
गोपी रीझि रही रस-तानन ।
सुध-बुध सब बिसराई धुन सुन मन मोहे,
मगन भई देखत हरि-आनन ।।
जीव-जंतु पसु-पंछी, सुर-नर-मुनि मोहे,
हरे सब के प्रानन ।
'बैजू' बनवारी बंसी अधर धरि,
वृंदावन-चंद बस किये सुनत ही कानन ।।

[८८] राग भैरव, चौताल

ए बंसी-नाद-सुर साधि कै बजाई प्रवीन कान्ह,
सप्त स्वर तान मधुरी धुनि।
स्रवन सुनत कछु सुधि न रही आली,
भनक परी मेरे कान सुनि-सुनि ॥
तन-मन रोम-रोम व्याकुल भयौ री,
जीत लिये गंधर्व-नारद मुनि गुनि।
'बैजू' के प्रभु नर-नारी पसु-पंछी मोहे,
और मोहे सुर-नर-मुनि ॥

[८९]

रास—

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

कुंजन मधि रच्यौ रास, अद्‌भुत गति लियैं गोपाल,
कुंडल की झलक देख, कोटि मदन ठटक्यौ।
अधर तौ सुरंग रंग, बाँसुरी सुहात संग,
टेढ़ी छबि देख-देख मेरौ मन अटक्यौ ॥
एरी अब देखौ जाय, ऐसे सौं कहा बसाय,
अलकन की गति निरख, सेषनाग सटक्यौ।
निरतत संगीत री, तत-तत-थेई तत-तत-थेई,
त्रिभंगि अंगि रंगी चाल देख, इंद्र-धनुष पटक्यौ ॥
रुनक-भुनक नूपुर ठुनक, रुनभुन-रुन-भनन-ननन,
सनन-ननन बंसी बाजै, मंद मुख सौं मटक्यौ।
रति-विलास सुख की रास भनत 'बैजू' गोपाल,
यह सरूप दरस-परस वृंदाबन कौं सटक्यौ ॥

[९०]

रागिनी मुलतानी, धनाश्री चौताल

विद्या सोई क्यौं न गाइयै, जासौं मिलि हैं री नंदलाल।
वृंदाबन सघन कुंज रमित नाँचत रास, बाजै मृदंग,
ताकट-तक ताकट-तक धुमकट-तक गावत विविध दै-दै ताल॥

सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना प्रमान,
बंसी मधि टेरत तान, थकित सुर-नर-मुनि बिमान,
राखत है कुसुम-माल ।
'बैजू' प्रभु के साधैं तीन लोक मोहि लियौ,
ब्रह्मा-महादेव ध्यान थकित, चंद्र-सूर्य पवन-पानी सेष-पाताल ॥

होली— [६१] पुलिंदिका, धमार
फागुन गढ़ जो बनाई, सखियाँ गोपी ग्वालिन सब जुर मिलि आई ।
अबीर गुलाल की बुरज बनाई, तोप धरी जब बंब घुराई ॥
गेंद कुमकुमा गोला चलत है, रंग बूँदन की झरी लगाई ।
कहै 'बैजू बावरा' सुनौ हो गोपाललाल, घेरि लियौ अब जादौं राई॥

विरह— [६२] रागिनी मुलतानी, ताल धमार
प्यारे बिन भर आये दोऊ नैंन ।
जब तैं स्याम गमन कियौ गोकुल तैं, नाँही परत री चैंन॥
लागै भूख प्यास नाँ निद्रा, मुख आवत नहीं बैंन ।
'बैजू' प्रभु कोई आन मिलावै, वाकी बलिहार चरन-रैंन ॥

७—प्रकीर्ण

[६३] राज जैजैवंती, चौताल
प्रथम मनि ओंकार, देवन मनि महादेव,
ज्ञानिन मनि गोरख, नदिन मनि गंगा ।
गीत मनि संगीत, संगीत मनि सुर-ताल,
ताल मनि मृदंग, नृत्य मनि रंभा ॥
राजन मनि इंद्रराज, गजन मनि ऐरावत,
विद्या मनि सरस्वती, वेद मनि ब्रह्मा ।
कहै 'बैजू बावरे' सुनियो गोपाललाल,
दिनन मनि सूरजदेव, रैन मनि चंद्रमा ॥

[६४] राग भैरव, चौताल

सा रे रे ग म प ध नि सप्त सुर, मो मन में ऐसौ ही आवै।
आरोही अवरोही और संचारी लै दिखावै ॥
नी ध प म ग रे सा नीनी धध पप मम गग रेरे सा।
सा रे ग म प ग म प ध नी ध नी सा रे सा॥
नीध नीध पम पम गम नीध रेगम पम गग रेरे,
अलंकार नाद तीन ग्राम मूर्छना श्रुति प्रमान,
सा नी ध प सा रे ग म, कंठ बरन बनावै।
कहै 'बैजू बावरे' सुनियै गोपाल नायक,
संगीत मुद्रा सुद्ध बानी तंत्र मत सौं बतावै॥

[६५] कौशिकी, चौताल

महकी सुर षरज, रिषभ सुर छाग री,
दादुर सुर है री गंधार।
मध्यम तमचुर सुर, पंचम कोकिल सुर,
केकी सुर धैवत, निषाद कुंजार॥
आरोही हंस सौ, अवरोही वृषभ सौ,
मूर्छना सर्प सी संगीत की धार।
कहै 'बैजू बावरा' सुनियै गोपाललाल,
केते गुनी पिछड़े, काहू न पायौ नाद कौ पार॥

———

गोपाल के ध्रुपद

१—वंदना

[१] राग भैरव, चौताल

सर्वदेव—

जय सरस्वति-गनेस-महादेव-सक्ति-सूर्य सब देव,
देहु मोहि विद्या वर कंठ पाठ।
भैरव-मालकोष-हिंडोल-दीपक-श्री-मेघ, मूर्तिमंत हिरदै रहैं ठाठ॥
सप्त स्वर, तीन ग्राम, इकईस मूर्छना,
बाइस सुरति, उनंचास कूट तान, लाग-डाट।
'गोपाल नायक' हौ सब लायक,
आहत-अनाहत सब्द सौं ध्याऊँ, नाद ईस्वर बसै मो घाट॥

[२] रागिनी टोड़ी गुर्जरी, चौताल

श्रीकृष्ण—

गिरिधर गदाधर चक्रधर गोपाल माधव गरुड़-पति,
गरुड़-गामी मुकुंद माखनहारी हिया।
ऐ ऐ याते ऐ ऐ या तिया तीय तीय तिया तिया इया॥
जग उद्धारन जानकीरमन कृष्न केसी-मथन,
कालीनाथन विस्वपति भक्तन सुखकारी जिया।
पम मग मम गसा मप धसा ए नाम गीत कौं गाइया॥
सोई तौ सार है संसार सागर,
भनत 'गोपाल' नाम कृपा सीख तिया॥

२— राज-प्रशंसा

सिकंदरशाह— [३] रागिनी मुलतानी, तिताला

दिल्लीपति नरेन्द्र सिकंदरसाह,
जाकौ डर से ध्वनि पै तिलहि लायौ।
दल साज महिमा अपार अगाध जहाँ,
गुनी जन विद्या तहाँ कीरत छायौ ॥
नाद विद्या गावै सुनि आलम धावै,
दीन-दुनिया कैं तुमहि अवतार आयौ।
कहत 'नायक गोपाल' चिरंजीव रहौ पादसाह,
गहन बन तैं आप मृग धायौ[1] ॥

राजा राम— [४] रागिनी भीमपलासी, तिताला

ओ तुअ गत ममगे उमगे। मेरे आइया ममगे उमगे उमगे ॥
बरचीर पवंग तुअ अंग रे। अली गोल संग अमोल रे ॥
मस्तक कुंडल डुल्ल रे। धारू गावत 'नायक गोपाल' रे ॥
राजा राम चतुर सुजान रे। तुअ चंचल अलक सु आन रे ॥
तिया इया इया तिया गावै तान रे।
आइए आइए इया इया तिया इया तु अमान रे ॥

---

[1] 'ध्रुपद स्वर लिपि' पृ० १०७ से उद्धृत। इसी से मिलता हुआ निम्न ध्रुपद सम्राट अकबर की प्रशंसा में भी मिलता है—

दिल्लीपति नरेन्द्र अकबरसाह, जाकौ डर डरे धरती पुहुप माल हलायो।
दल साज चतुरंग सेना अगाध जहाँ,
गुन ठहों चहूँ विद्याधर आय-आय नाद-भेद गायो ॥
गुनी जन जगत केतो कों दियो अघाय, तुव प्रताप सुन धायो।
कहत 'नायक गोपाल' तुम चिरंजीव रहो साह,
देत करोरन आवत धाय-धाय, मृग माला पहरायो ॥
—संगीतज्ञ कवियों की हिंदी रचनाएँ, पृ० ४६

३—संगीत-विवेचन

नाद-वंदना— [५]

राागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

प्रथम आदि ओंकार तीन ग्राम चौदह सुर,
जब-जब पावत गुनी जन कर-कर विचार।
आरोही-अवरोही अस्थाई संचाई, चारो बानी–
गुबरहारी खंडारी डागुरी नौहार ॥
उनंचास कूट तान इकईस मूर्छना,
उरप तिरप बाईस सुरति गावत आकार।
भनत 'गोपाल' जानत संगीत पंडित अति रसाल,
नैंम ब्रत लेत ढरन मुरन यह विद्या अपरंपार ॥

नाद-मंत्र— [६] रागिनी भीमपलासी, तिताला

अत गत मंत्र गंम् मम गंम् मगं मम गम,
मग ममग अत गत मंत्र गाइया।
त्रैलोकि भूमे कमल रे, हरि कोल रे, सन्तोल रे, मकरंद आइया॥
उदधि चंद धरौ मन में, अत गत मंत्र गाइया।
तड़तक भूमरण जुगल रे, ततकाल निरत अपार रे,
अधार रे, धारू गावत 'नायक गोपाल' रे,
राजा राम चतुर भये, अइया रे, अत गत मंत्र गाइया॥

नाद-सिद्धि— [७]

कहावै गुनी जो साधैं नाद, सब्द ताल कर ठोक गावै।
मारग देसी अरु मूर्छना गुन उपजैं मति,
सिद्ध गुरू साध चावै सो पंचन मधि दरपावै॥
उक्ति-जुक्ति भक्ति-मुक्ति गुप्त होवै ध्यान लगावै।
तब 'गोपाल नायक' अष्ट-सिद्धि नव-निधि,
जगत मधि पावै॥

[८]

रागिनी मुलतानी धनाश्री, चौताल

प्रथम नाद ओंकार तीन ग्राम सप्त सुर,
गावत गुनीजन कर विचार।
आरोही अवरोही अस्थाई संचाई,
बानी भेद लै सहित उचार॥
उनंचास कूट तान इकईस मूर्छना,
बाईस सुरति गावत आकार।
भनत 'गोपाल नायक' अति रसाल,
नैंम बरस लेत अठारह भार॥

नाद-निर्देश— [९] रागिनी गुर्जरी, तिताला

लघु गुरु समझ धर रे, ज्यौं कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान।
जेही लघु तेही गुरु, लघु गुरु विवेक अक्षर लख,
सोई उलट धर रे, ज्यौं कहे ग्रंथन गुरुन प्रमान॥
मगन नगन जगन तगन भगन सगन यगनन जान।
छंद बंध प्रबंध संगीत मत, 'गोपाल नायक' करत विनान॥

[१०] मिश्र सर्जरी, तान सीर

सुर प्रथम सा रि ग म नाद रे, ताहै प्रगट वेद रे।
धारू ध्रुपद संगीत प्रबंध छंद, गुनी गावत शेष रे॥
चतुरंग त्रैबट तेलाना, सब्द सुरन कौ भेद रे।
कहै 'नायक गोपाल' स रे ग म अगम सुर देख रे॥

बैजू को संबोधन— [११] कौशिकी, चौताल

षरज कहाँ से, रिषभ कहाँ से, कहाँ से उपज्यौ सुर गंधार।
मध्यम कहाँ से, पंचम कहाँ से, कहाँ सै धैवत, निषाद नार॥
आरोही कहाँ से, अवरोही कहाँ से,
मूर्छना कहाँ से, गीत संगीत की धार।
कहै 'गोपाल लाल' सुनियै बैजू बावरे,
नाद अथाह, जाकी गति अगम अपार॥

वीर-रस-- [१२]

झुकाय झुमकत झमकि गहैं करबार, अड़न अरिल्ल रे ।
भुज परचंड औ बरवंड, दंड-अदंड,
दंडिन-खंडि, आखंड खंड-खंडन अटल्ल रे ॥
धारू गावत 'नायक गोपाल' छत्रपती संग्राम झूँझरौ,
एते अइया अइया ऐऐ याइ तान तिया इया इया आ अलल्ल रे ॥

[१३] रागिनी मुलतानी, तिताला

अरि दल-मल रे जोधा, नर दल भीम कर्न समान ।
तड़तक झुमन जुग लरे ततकाल निरत अपार रे,
धारू गावत 'नायक गोपाल' रे,
ते ऐया ऐया आइया आइया आमान ॥

४---कृष्ण-लीला

नृत्य— [१४) रागिनी गुर्जरी, सुर फाक्ता

काँधैं कमरी-गौ अलाप कैं नाँचै जमुना तीर,
नाँचै पिछले पाँव रे, गति लै लै नाँचै आँगनवा ।
वो आली मृदंग बाँसुरी बजावै,
'गोपाल' बैंन बतरस लै, आनंदै मुराद मेलवा ॥

प्रेमासक्ति— [१५] रागिनी परज, तिताला

लागी लगनियाँ को छुड़ावै, कोऊ लाख कहौ जिय एकौ न भावै ।
घूँघट खोल मिलौ क्यों नाँ पिय सौं, लाग गई जब जिय तरसावै ॥
और बन फूले फूल-फुलबारी, हमरे फूलन मन जिय अकुलावै ।
प्यारे 'गोपाल' की इन आँखिन सौं, उरझी अखियाँ को सुरझावै[१]॥

---

[१] प्रेमासक्ति और होली विषयक सं० १५ से १८ तक के ४ ध्रुपद भाषा-शैली के कारण किसी अन्य गोपाल के रचे हुए भी हो सकते हैं ।

[१६]　　रागिनी काफी सिंधु

मैं तौ साँवरे संग खेलन जैहौं, घर बैठें कहाँ लौं जीव तरसैहौं।
मत कोई मोय हटकौ री सखी, आज बबा की सौं मैं विष खैहौं ॥
और रंग सब फीके लागे, पियरे पट सौं हियरा हुलसैहौं।
प्यारे 'गोपाल' सुहात यही मन, मोहन मित्र हियैं लिपटैहौं ॥

होली—　　[१७]　　रागिनी भैरवी सिंधु

खेलन आई रंगराती होरी बाल।
साँवल गोरी लै-लै दौरी, भर-भर मुठी गुलाल ॥
इततैं आई नवल राधिका, उततैं आये नंदलाल।
इनके संग सब गोप बधू हैं, उनके संग सब ग्वाल ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है, यह दिन दीनदयाल ।
मन माने कौ फगुवा लैहौं, जैहौ कहाँ 'गोपाल' ॥

[१८]　　रागिनी जैजैवंती, तिताला

होरी लागी कान्ह, अब ही तैं उमदात फिरौ,
जरै ऐसौ ख्याल, जी में लाज टर जायगी।
चलैगी पिचकारी तौ तिहारी सौं बिगरि जैहै,
नई जरतारी मेरी सारी भर जायगी ॥
झूँठी मान मूठी लै जु मुख तुम तानत हौ,
गैया के चरैया हौ बलैयाँ उर जायगी।
परैगौ गुलाल मेरी आँखन में लाल, तो—
'गोपाल' आज ब्रज में जबाल पर जायगी ॥

———

५—प्रकीर्ण[1]

गोप-वंश वर्णन— [१६]

तीन भाँति के गोप बखानौ। बैस्य अहीर गूजर सुखसानौ ।।
गोप वेस बल्लव कहिये जे । जादव बंस समुद्भव हैं ते ।।
बड़ी वृत्ति गोरच्छा इनकी। माता बंस ख्यात है तिनकी ।।
बेद पढ़हिं सब अर्थहिं मानैं। जे जावहिं द्विज गन सनमानैं ।।
वैस्य कन्यका द्विज तें जावै। अंबष्टा सो नाम कहावै ।।

+ + + +

स्याम सरीर मेघ उनिहारी। इंद्र धनुष दुति सोहति सारी ।।
थोरिक थूल कछू इक लावी। स्याम केस जनि एड़ी दावी ।।
पूत जन्यौ उनहारि आपनी। सुभ सामुद्रिक लच्छन धनी ।।
कीरति जू की प्रान पियारी। नाम देवकी मति उजियारी ।।
दूजौ नाम देवकी जानौ। आदि पुरान पुरान बखानौ ।।
ब्रजरानी राजत सर्वोपर । संपति मूरतिवंत नंद घर ।।
दया दूध पोषे जिनि गिरधर। करहु कृपा 'नायक गोपाल' पर ।।

[२०]

बंदियै नंद आनंददानी।
भुवन मंगल चरित, हरत सब के दुरत,
विमल कीरति करत, स्रुति बखानी ।।

---

[1] ये पद फटे हुए पत्रे पर लिखे मिले हैं। प्रथम पद अपूर्ण है। इन पदों का रचयिता कौन सा गोपाल नायक है, यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता है।

सुभ्र चंदन गौर, लंबु थुंदिया सु तन,
बसन बंधूक दुति अति ही सोहै।
सेत अरु स्याम अभिराम डाढ़ी बनी,
रूप-गुन रासि त्रिभुवन कों मोहैं ।।
गोप सिरताज ब्रजराज राजनि-मनी,
मीत बसुदेव के चित्त हारी।
स्नेहकर सुधाधर सजन वृषभान के,
दान सनमान आनंद कारी ।।
पुन्य सौजन्य के कृष्ण स्नेह-सिंधु,
धर्मधर धीर पर पीर हरता।
करहु करुना कुँवर 'नायक गोपाल' पर,
देहु ब्रजवास ब्रजभूमि भरता ।।

परिशिष्ट

★

बक्सू के ध्रुपद

गणेश-वंदना— [१] राग भैरव, चौताल

पूजौ रे गनेस कों गुनी ।
रिद्धि-सिद्धि के दाता, विघन-हरन दुनी ।।
जिन ध्यायौ तिन्ह पायौ, मन इच्छा भनो ।
'बक्सू' के प्रभु कों ध्यावत, सुर-नर-मुनी ।।

संगीत— [२] रागिनी गौरी, ताल रूपक

रे म प नि सा रे सा नि ध प म म ग, रे सा नि प नि रे नि सा ।
प नि रे नि रे सा म ग रे नि रे सा रे सा रे सा,
नि नि नि ध ध प प म म नि ग रे रे सा ।।
सप्त सुर तीन ग्राम इकईस मूर्छना बाइस सुरति,
उनचास कूट तान के यह प्रमान ।
'बक्सू' प्रभु यह अथाह विद्या रे, नि रे सा रे सा नि,
नि नि ध ध प प म म ग ग रे रे सा ।।

आसक्ति— [३] रागिनी भैरवी, ताल धमार

नयन बिरहिया तेरे पिया रे,
रंग-रस बस कर लीन्हौं जिया रे ।
बाँके 'बक्सू' कहै जादू डारौ,
सुंदर स्याम मोरी सुरतियाँ बिसारे ।।

[४] रागिनी परज कलिंग

अरे हो राजा जी, म्हाँ से काँई वो गुना,
महल पधारौ अरज करूँ हूँ पना।
अब की बार म्हानें 'बक्सू' साहबाँ, मेहर करौ अपना ।।

[५] राग कलिंगड़ा खेमटा

पिया छाँड़ दे मोरी बहियाँ रे, अपने गरज के सइयाँ।
लगर-भगर कै लिपटत जात हठइया ।।
हँस-हँस धस, रस बस पड़ गहलौ, ऐसे मन के छइयाँ।
गई सो गई मोरी बैस अकारथ, अबहू समभ गुसइयाँ ।।
सब तजकै धाम तेरे अइलो, और आय परौं पइयाँ।
अवगुन 'बक्सू' नित दरसन पइयै, चरन-कमल बलि जइयाँ ।।

इस पुस्तक के पृष्ठ १ की १५ वीं पंक्ति में 'परिमाण' के स्थान पर 'परिणाम' तथा पृष्ठ ३६ की २२ वीं और २४ वीं पंक्तियों में 'गायक' के स्थान पर 'नायक' छप गया है। पाठक इन्हें शुद्ध करके पढ़ने की कृपा करें।